SvAmi VedAnta Desikan's

PAdukaa Sahasram

(Prastava paddhathi)

Translated into Hindi by
Dr. Ankit Sharma
From the Commentary in English by
Oppiliappan Koil SrI V.Sadagopan SvAmi

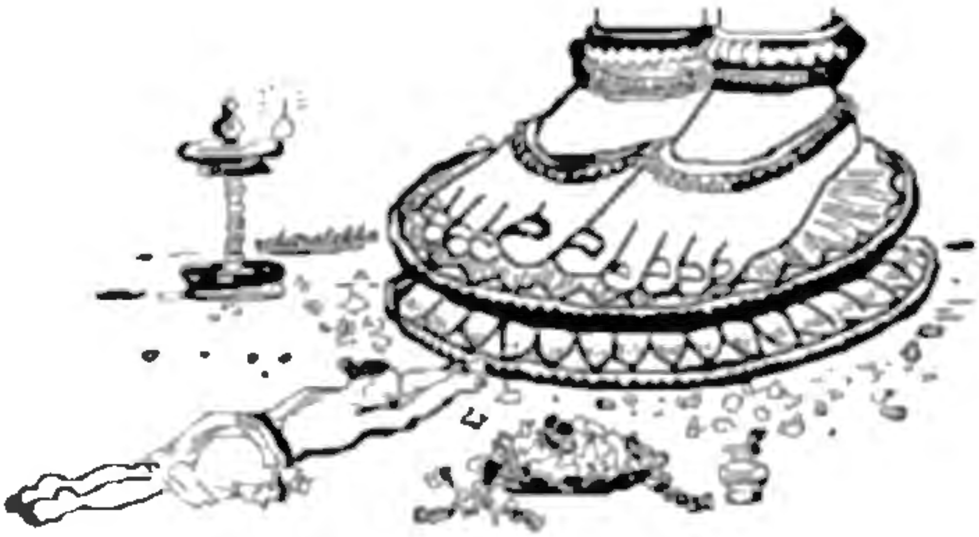

Art work by: Sau. R. Chitralekha

Cover Art and eBook compilation by: Sri Murali Desikachari

श्रीरंगनाथ-पादुका-सहस्रं

श्रीरङ्गनाथदिव्यमणिपादुकाभ्यां नमः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्त-महादेशिकाय नमः

श्रीमते बालमुकुंद-महादेशिकाय नमः

श्रीमते वीरराघव-महादेशिकाय नमः

श्रीमते श्रीधर-महादेशिकाय नमः

श्री जानकीवल्लभ-भगवान् की असीम कृपा से और जगद्गुरु रामानुजाचार्य श्रीमद् उत्तर अहोबिल श्रीझालरियापीठाधिपति अनंतश्रीविभूषित स्वामीजी श्री घनश्यामाचार्य जी महाराज के आशीर्वाद से श्री वेदांतदेशिक स्वामी जी महाराज के अवतरण के 750 वें वर्ष के उपलक्ष्य में श्री झालरिया मठ डीडवाना की ओर से प्रस्तुत

लक्ष्मीनाथ समारम्भां नाथयामुनमध्यमाम्।
अस्मादाचार्यपर्यन्ताम् वन्दे गुरुपरम्पराम्।।

यो नित्यमच्युत-पदाम्बुज-युग्म-रुक्म-व्यामोहतस्तदितराणि तृणाय मेने ।
अस्मद्-गुरोर्भगवतोऽस्य दयैकसिंधो रामानुजस्य चरणौ शरणम् प्रपद्ये।।

रामानुजदयापात्रम् ज्ञानवैराग्यभूषणम्।
श्रीमद्वेंकटनाथार्यम् वन्दे वेदान्तदेशिकम्।।

श्रीमान् वेङ्कटनाथार्यः कवितार्किककेसरी ।
वेदान्ताचार्यवर्यो मे सन्निधत्तां सदा हृदि ॥

श्रीवीरराघवदयार्द्रकृपावतारं श्रीजानकीशपदपद्मपरागभृंगम्।
श्रीश्रीधरार्यचरणाम्बुजलग्नमौलिं श्रीदेशिकार्यघनश्यामगुरुं नमामः।।

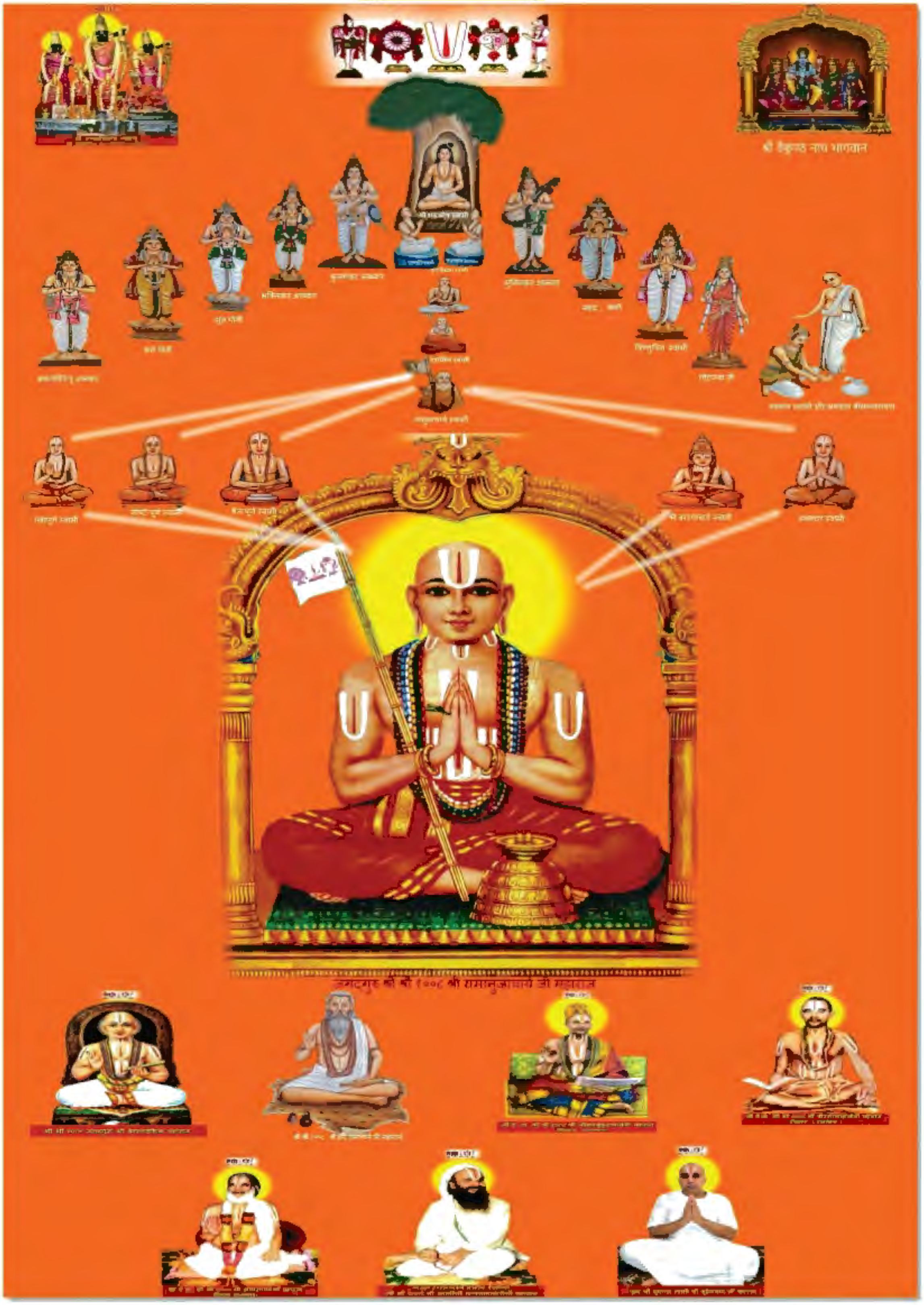
श्री वैकुण्ठ नाथ भगवान
जगद्गुरु श्री श्री १००८ श्री रामानुजाचार्य जी महाराज

श्री वेदान्तदेशिकस्वामी द्वारा रचित श्रीरंगनाथपादुकासहस्रं ,पर
श्री ओप्पीलियप्पन कोविल श्री वरदाचार्य शठकोपन् स्वामी की पुस्तक पर आधारित हिंदी अनुवाद एवं विशेष व्याख्या। (Oppiliappan Koil Varadachari Sadagopan swami)

श्री रंगनाथपादुका (श्री शठकोप), श्रीरंगम्

श्रीशठकोपस्वामी श्रीरंगनाथभगवान् के श्री चरणों में, श्रीरंगम्

श्रीः

॥श्रीमते रामानुजाय नमः॥

॥श्रीमते निगमान्त महादेशिकाय नमः॥

श्रीमान् वेङ्कटनाथार्यः कवितार्किककेसरी ।

वेदान्ताचार्यवर्यो मे सन्निधत्तां सदा हृदि ॥

इस श्री रंगनाथ पादुका-सहस्रं नामक काव्य की बहुमुखी उत्कृष्ट कृति में स्वामी श्री वेदांत देशिक ने भगवान की दो पादुकाओं की महिमा का गुणगान किया है, जो श्रीरंगनाथ भगवान् के चरण कमलों की शोभा और उनका आश्रय ग्रहण करती हैं। इस सुप्रसिद्ध काव्य में कुल 32 अध्याय हैं जिनमें 1008 श्लोक सम्मिलित हैं। ऐसा कहा जाता है कि स्वामी श्री वेदांत देशिक ने इन 1008 श्लोकों की रचना रात्रि के एक याम (3 घंटे में) में की थी जो उन्हें एक श्री वैष्णव से चुनौती के रूप में मिली थी। श्रीरंगनाथपादुकासहस्रम् स्वामी श्री वेदांत देशिक की सबसे प्रसिद्ध साहित्यिक, दार्शनिक एवं धार्मिक रचनाओं में से एक है। उनके दूसरे काव्य संकल्प-सूर्योदय एवं यादवाभ्युदयम्, हंस संदेश और सुभाषित नीवि की अनूठी योग्यताएं हैं। उदाहरण के रूप में संकल्प-सूर्योदय एक नाटक है जिसमें श्री वैष्णव दर्शन के मुख्य सिद्धांत शामिल हैं।

हंस संदेश का प्रतिरूप एक प्रसिद्ध कवि कालिदास द्वारा रचित "मेघदूत" के बाद तैयार हुआ। इस तरह से वेदान्त देशिक स्वामी की साहित्य और काव्य प्रतिभा का ज्ञान सबके सामने आया। श्री कृष्ण भगवान् के जीवन और इतिहास पर उनके काव्य जो की यादवाभ्युदय के नाम से भी जाना जाता है, जिसमें स्वामी श्री वेदांत देशिक ने यदुकुल का गुणगान किया है। सुभाषित नीवि एक व्यवहारिक गीत है जिसमें कवि भर्तृहरी के नीतिशतक जैसे ज्ञान पूर्ण एवं संक्षिप्त कथन हैं। श्री रंगनाथपादुकासहस्रम् की विशिष्टता यह है कि यह साहित्यिक, काव्य, दार्शनिक और धार्मिक मर्म का एकीकृत सार है, और इसमें सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस स्तोत्र में स्वामी श्री वेदांतदेशिक का उच्चतम स्तर का भक्ति भाव सम्मिलित है।

श्रीरंगम् के एक श्री वैष्णव ने स्वामी श्री वेदांत देशिक को चुनौती दी और सुझाव दिया कि जो कोई भी एक रात में अपनी पसंद के किसी भी विषय पर 1000 श्लोकों के काव्य की रचना करेगा उसे एक महान कवि की पदवी प्रदान की जाएगी। स्वामी श्री वेदांत देशिक किसी भी उपाधि को प्राप्त करने या श्रीरंगम् के एक वैष्णव द्वारा आयोजित अहम् केंद्रित प्रतिस्पर्धा में हिस्सा

लेने में किसी प्रकार की रूचि नहीं रखते थे, लेकिन उन्होंने इस चुनौती को श्री रंगनाथ भगवान् का आदेश समझ के स्वीकार किया कि उनके श्री रंगनाथ भगवान् के अनंत-कल्याण-गुण पर एक स्तुति की जाए। स्वामी श्री वेदान्त देशिक ने परमपुरुष भगवान् श्री रंगनाथ की पादुकाओं का विषय चुना और उनकी पादुकाओं के महिमा के गुणगान में 1008 श्लोकों की एक रचना प्रस्तुत की। प्रतिद्वंदी ने श्री रंगनाथ भगवान् के पद कमल का विषय चुना और पूरी रात में मुश्किल से 300 श्लोक पूरे करने के बाद अपना व्यर्थ प्रयास छोड़ दिया। अगले दिन की सुबह स्वामी श्री वेदांत देशिक ने श्रीरंगम् के स्वामी रंगनाथ भगवान् को उनका ग्रंथ श्रीरंगनाथपादुकासहस्रम् मंदिर में प्रस्तुत किया। वहां पर उपस्थित सभी भक्तों और विद्वानों द्वारा उन्हें सम्मानित किया गया और सबसे महत्वपूर्ण बात स्वामी वेदांत देशिक ने स्वयं भगवान् का आशीर्वाद प्राप्त किया।

एक और संस्करण के अनुसार , स्वामी श्री वेदांत देशिक तिरुवहिंद्रपुरम् में कई वर्षों तक निवास के पश्चात श्रीरंगम् में निवास करने लगे एवं अपने शिष्यों को सिद्धांत प्रवचन देने में लगे रहे। श्रीरंगम् के वासियों ने भगवद्-रामानुज सिद्धांत की , स्वामी श्री वेदान्त देशिक की प्रतिभाशाली और ज्ञानपूर्ण व्याख्या की भरपूर प्रशंसा की। विद्वानों के एक समूह ने वेदांत देशिक से आग्रह किया कि वे इस समय अपने पेरिया पेरुमाल के प्रति समर्पण को दर्शाने हेतु श्रीरंगम् के भगवान् पर उत्तम काव्य की रचना करें। स्वामी वेदांत देशिक ने उनकी इस इच्छा को भगवान् का आदेश मानकर स्वीकार किया एवं श्रीरंगनाथपादुकासहस्रम् के भक्ति पूर्ण श्लोकों की रचना की।

इस असाधारण काव्य में उन्होंने समझाया कि भगवान् की पादुकाएं एवं नम्मालवार एक ही हैं और एक समान हैं। उन्होंने आगे इंगित किया की, भगवान् की पादुकाओं से भगवान् के चलने पर जो ध्वनि निकलती हैं, वो श्री शठ कोप स्वामी के मुख से निकले तिरुवाय्मोऴि (श्री प्रपन्नजन के कुलपति श्री शठकोप स्वामीजी द्वारा रचा गया 1000 पासुरों का ग्रंथ) के समान ही हैं।

स्वामी श्री वेदांत देशिक के हयग्रीव मंत्र उपासना के बल से उत्पन्न ये विशिष्ट श्लोक, मंत्र के रूप में बहुत शक्तिशाली हैं । पादुका सहस्रं के श्लोकों का जप और ध्यान विशिष्ट सिद्धियों को प्राप्त करने में सहायक हैं। पादुकाओं का बीजाक्षर के साथ में एक यंत्र भी होता है, जो घर की स्त्रियों को घर के पूजा ग्रहों में रंगोली बनाने में सहायक हैं, जिसकी सहायता से जाप करने पर पादुका

पहने हुए भगवान् एवं नम्मालवार का आह्वान किया जा सकता हैं । श्री रंगनाथ पादुका सहस्रं के जप के प्रभाव से कई लोगों के जीवन में उत्पन्न होने वाली सिद्धियों का बार-बार अनुभव किया गया हैं । लोग इसके श्लोकों के जप के प्रभाव से कई लौकिक और वैदिक पुरुषार्थ प्राप्त करते हैं। सार रूप में इसमें आचार्यों का और आचार्य भागवत संबंध की महिमा का गान है । इसलिए यह संत श्री वाल्मीकि जी के श्रीमद् रामायण जैसा पारायण ग्रंथ है । जब कोई व्यक्ति रंगनाथ पादुका सहस्रम् का पारायण करता है तो वह श्रीरंगम् के भगवान् के सीधे सानिध्य का आनंद लेता हैं ।

जब हम रंगनाथ पादुका सहस्रं के नाद पद्धति के 100 श्लोकों का भक्ति पूर्वक जप करते हैं, तब कोई भी जप करने वाला रंगनाथ सेवक, रंगनाथ भगवान् के पादुकाओं की आवागमन की ध्वनि का आनंद ले सकता हैं । इस संसार की सबसे सुंदर ध्वनि जो कि श्रीरंगनाथ भगवान् के चरणों की आवाज हैं, जिसके साथ भगवान्, श्रीरंगम् को छोड़कर हमारे पूजा गृहों में आते हैं ऐसा स्वामी श्री वेदांत देशिक द्वारा इसमें संग्रहित किया गया हैं ।

जब कोई भगवान् की घंटी वाली पादुकाओं को अपने मस्तक पर धारण करके लेकर जाता हैं, तो वह बहु धारा प्रवाह ध्वनियों का अनुभव कर सकता हैं जिसे भगवान् की पादगति कहते हैं। इसे सिंह गति और व्याघ्र गति भी कह सकते हैं।

सत्याल्लोकात् सकलमहितात् स्थानतो वा रघूणां

शङ्के मातः समधिकगुणं सैकतं सह्यजायाः ।

पूर्वं पूर्वं चिरपरिचितं पादुके यत् त्यजन्त्या

नीतो नाथस्तदिदमितरन्नीयते न त्वयाऽसौ ॥३१

इसका अर्थ होता हैं :-

ओह पादुके ! आपने पहले भगवान् को श्री वैकुंठ से सत्यलोक (ब्रह्मा जी के लोक) में लाई उसके पश्चात आप उन्हें अयोध्या के रघु के निवास स्थान में लाई उसके बाद आप उन्हें श्रीरंगम्

ले गई आपकी पीठ पर श्रीरंगम् आने के बाद उन्होंने कहीं बाहर कदम नहीं रखा है, इसलिए मैं यह बिल्कुल सही निष्कर्ष निकालता हूं कि श्रीरंगम् से श्रेष्ठ जगह इस संसार में कोई नहीं हैं ।

श्रीरंगम् की अतिरिक्त महिमा

श्रीरंगम् , नालायिर दिव्य प्रबन्धम् के 247 पाशुरों में 11 आलवारों द्वारा माना गया एक दिव्य देश है , जो आलवारों के लिए शोभनीय स्थान हैं ।

यह वह स्थान है जहां आंडाल, कुलशेखर आलवार, तोन्डरड्डिप्पोडी आलवार, तिरुप्पाण आलवार, यतिराज रामानुज स्वामी ने भगवान् को प्राप्त किया था । आंडाल और तिरुप्पाण आलवार व्यक्तिगत रूप से भगवान् के साथ विलीन हो गए थे और अन्य इस दिव्य देश से वैकुंठ को लौट गए। पेरिया नाम्बी, पाराशर भट्ट , वड़क्कू तिरुविधि पिल्लै , पिल्लै लोकाचार्य और उनके भाई आचार्य-हृदयम के लेखक एवं कई अनेक आचार्यों का जन्म यहां हुआ हैं ।

आचार्य जैसे श्रीनाथमुनि स्वामी , आलवन्दार स्वामी ,मनवाल मामुनीगल और अन्य आचार्य पुरुष यहां रहे और उन्होंने भगवान् श्री रंगनाथ एवं उनकी पादुकाओं की अर्चना की हैं ।

आचार्यों का महत्व एवं उनकी महिमा

हमारी परंपरा में भगवान् की पादुकाएं आचार्यों के समान हैं और विशेषकर नम्मालवार जिन्हें शठकोप सूरी के रूप में सम्मानित किया जाता हैं। इसलिए पादुकाओं को श्री शठकोप कहा जाता हैं जो हमारे मस्तक पर भगवान् का सानिध्य प्राप्त करने के लिए रखा जाता हैं जिससे हम आचार्य के संबंधों को याद कर सकें।

यह हमारा गहरा विश्वास है कि केवल एक आचार्य के बल एवं शक्ति के माध्यम से जीवन की सद्गति प्राप्त की जा सकती है। आचार्य की परिभाषा हमारे सम्प्रदाय द्वारा इस प्रकार स्वीकृत की जाती हैं।

नल्ल सन्गतिकळै अरिन्द , अन्तप्पडि नडन्द , अप्पडिये पिररुक्कुम् तेरिवित्त , नडत्ति वैक्किरवन्

(वह जो आचार्यों के संदेश को सही रूप से समझता हैं , उनका पालन करता हैं , उनका निष्कर्ष निकालता हैं और अपने शिष्यों तक पहुंचाता हैं) आचरण का पालन करना ,अनुष्ठान करना दूसरों को खुद के उदाहरण से समझाने में मदद करना एवं अपनी तपस्या के बल से भगवान् में लीन होना सदाचार्य की पहचान हैं। स्वामी श्री वेदांत देशिक ने इन सिद्धांतों पर बल देने के लिए ,रहस्यत्रय सार के 32 अध्यायों में आचार्य की असाधारण और अद्वितीय भूमिका को शामिल किया हैं।

नम्मालवार का हमारी परंपरा में महत्व

श्री झालरिया मंदिर डीडवाना में परिक्रमा में विराजमान

श्री शठकोपस्वामी

यह अच्छी तरह से ज्ञात है कि सदाचार्य प्राप्त करना बहुत दुर्लभ होता है। भगवद् अनुग्रह के मार्ग पर जाने वाले पद चिन्ह इस क्रम से माने जाते हैं :- सदाचार्य कटाक्ष ,सदाचार्य अनुग्रह (भगवान् का उच्छिष्ट प्रसाद),भगवान् का अनुग्रह एवं मोक्ष।

स्वामी श्री वेदांतदेशिक ने अपने से पहले के सदाचार्यों कि इस बात पर इस तरह जोर दिया कि जीवों की सद्गति तो आचार्यों के बल एवं शक्ति तथा उनके साथ संबंधों से ही संभव है । उनकी प्रसिद्ध रचना रहस्यत्रयसार के अंत में स्वामी श्री वेदांत देशिक ने इसी बात पर जोर दिया हैं । इस कारण से गुरु परंपरा को समझना और उनका सम्मान करना बहुत आवश्यक है ।

हमारी परंपरा में सबसे पहले आचार्य श्रीमन्नारायण भगवान् जो सर्वेसर्वा हैं । उनके कारण ही संप्रदाय का शाश्वत दीप सदैव चमकता रहता है और वे आगे आने वाले आचार्य के मन को भी प्रकाशित करते हैं । उत्तराधिकार की परंपरा के माध्यम से , नम्मालवार (श्री शठकोप स्वामी {तिरुक्कुरुगूर शठकोप}) का आचार्य परंपरा में महत्वपूर्ण स्थान हैं ।

उनका सम्मान "प्रपन्न जन कूटस्थ" और हमारे "कुलपति" रूप में किया जाता है।

उन्होंने स्वयं अपनी पेरिय तिरुवंदादी (पाशुर 31) में कहा है।

"भगवान् के सेवक और दास बनकर हम उनकी चरण पादुकाओं जैसे बन गए हैं।" यह हमारी मुख्य मान्यता है कि नम्मालवार को श्रीरंगम् के भगवान् की चरण पादुका के रूप में माना जाता है।

इसलिए श्री वेदांत देशिक स्वामी ने भगवान् के चरण कमलों को सेवा के स्थान पर श्रीरंगम् के भगवान् की पादुकाओं की महिमा गाने को चुना।

आगे की प्रविष्टियों में स्वामी श्री वेदांत देशिक के पादुका सहस्रं के 32 अध्याय का सारांश बताया जाएगा और हर पद्धति के श्लोकों की विस्तार से व्याख्या भी सम्मिलित होगी।

इस प्रविष्टि में , हम स्वामी श्री वेदान्त देशिक के श्रीरंगनाथपादुकासहस्रं के प्रत्येक अध्यायों को विशिष्ट रूप से सम्मिलित करेंगें। रहस्यत्रय सार की तरह रंगनाथ पादुका सहस्रं में भी 32 अध्याय हैं। स्वामी श्री वेदांत देशिक की रचना पादुका सहस्रं के 32 अध्यायों का संदर्भ उपनिषदों में बताई गई 32 ब्रह्मविद्याओ के सार से ही है।

श्री वेदांतदेशिक स्वामी जी के द्वारा सैकड़ों ग्रंथों की रचना की गई और अंत में उनके द्वारा सारे ग्रंथों का सार रहस्यत्रयसार नामक ग्रंथ में उन्होंने संग्रह किया। उस ग्रंथ को उन्होंने अधिकरण में विभक्त किया ।और उसमें भी 32 की संख्या का महत्व दिखाई देता है , कि वहां पर भी कुल 32 अधिकरण है ।जो हमें दिखाते हैं कि उन 32 तरह के रहस्यों को जानकर ही हम भगवान की कृपा के योग्य बन सकते हैं।

विशिष्ट अध्ययन के लिए पद्धतियों के नाम एवं इन पद्धतियों में श्लोकों की संख्या इस प्रकार हैं

1 प्रस्ताव पद्धति 20

2 समाख्या पद्धति 10

3 प्रभाव पद्धति 100

4 समर्पण पद्धति 20

5 प्रतिप्रस्थान पद्धति 20

6 अधिकार परिग्रह पद्धति 20

7 अभिषेक पद्धति 30

8 निर्यातना पद्धति 30

9 वैतालिक पद्धति 10

10 श्रृंगार पद्धति 10

उपरोक्त पद्धति के बीच में श्री स्वामी वेदांत देशिक रंगनाथ पादुका सहस्रं का पहला चतुर्थक पूरा करते हैं ।

11संचार पद्धति 7

12 पुष्प पद्धति 30

13 पराग पद्धति 30

14 नाद पद्धति 100

15 रत्न सामान्य पद्धति 50

उपरोक्त पद्धति के माध्यम से स्वामी श्री वेदांत देशिक उनके 1008 श्लोकों के रंगनाथ पादुका सहस्रं के मध्य बिंदु तक पहुंचते हैं ।अब वह श्रीरंगम् में रात्रि के याम के अर्द्ध बिंदु पर हैं ।

16 बहु रत्न पद्धति 50

17 पद्म राग पद्धति 30

18 मुक्ता पद्धति 50

19 मरकत पद्धति 20

20 इंद्रनील पद्धति 30

21 बिम्ब-प्रतिबिम्ब पद्धति 20

22 कांचन पद्धति20

23 शेष पद्धति 10

इस पद्धति के मध्य में स्वामी श्री वेदांत देशिक समय के विपरीत दौड़ में रंगनाथ पादुका सहस्रं के तीसरे चतुर्थक तक पहुंच गए एवं काव्य के सबसे महत्वपूर्ण अंश में प्रवेश करने को तैयार हैं।

24 द्वंद्व पद्धति 20

25 पादुकासन्निवेश पद्धति 20

26 यंत्रिका पद्धति 10

27 रेखा पद्धति 10

28 सुभाषित पद्धति 10

29 प्रकीर्ण पद्धति 80

30 चित्र पद्धति 40

31 निर्वेद पद्धति। 20

32 फल पद्धति 38

पादुकासहस्रम् के सबसे अंतिम श्लोक में स्वामी श्री वेदांत देशिक अपने असाधारण क्षमता तथा उद्देश्य के साथ , हमें श्री रंगनाथपादुकास्तोत्रम् के सबसे महत्वपूर्ण और केंद्रीय संदेश और लक्ष्य की याद दिलाते हैं जो इस प्रकार हैं सदाचार्य ,भगवद् संबंध और श्री रंगनाथ भगवान् की दया और श्री रंगनायिकी की अनुकम्पा से हम जैसे उनके प्रिय बालकों को मोक्ष तथा पुरुषार्थ प्राप्त होता हैं ।

हम इस पृष्ठ को श्रीरंगनाथपादुकासहस्रं के प्रथम तथा अंतिम श्लोक से पूरा करेंगे।

सन्तः श्रीरङ्गपृथ्वीशचरणत्राणशेखराः ।

जयन्ति भुवनत्राणपदपङ्कजरेणवः ॥१॥

जयति यतिराजसूक्ति -र्जयति मुकुन्दस्य पादुकायुगली ।

तदुभयधनास्त्रिवेदी -मवन्ध्ययन्तो जयन्ति भुवि सन्तः ॥१००८॥

1 प्रस्ताव पद्धति

पादुकासहस्रं का परिचय

श्लोक संख्या 1 से 20

परिचय

प्रस्ताव का अर्थ हैं परिचयात्मक या आरंभ अथवा प्रस्तावना ।

पहली पद्धति का नाम पहले अध्याय से पड़ा इस पद्धति में 20 श्लोक हैं , बाकी की तरह यह पद्धति अनुष्टुप छंद प्रथम श्लोक से आरंभ होती हैं तथा आर्या छंद अंतिम श्लोक से समाप्त होती हैं ।

सन्तः श्रीरङ्गपृथ्वीशचरणत्राणशेखराः ।

जयन्ति भुवनत्राणपदपङ्कजरेणवः ॥१॥

भरताय परं नमोऽस्तु तस्मै प्रथमोदाहरणाय भक्तिभाजाम् ।

यदुपज्ञमशेषतः पृथिव्यां प्रथितो राघवपादुकाप्रभावः ॥२॥

वर्णस्तोमैर्वकुलसुमनोवासनामुद्वहन्ती -

माम्नायानां प्रकृतिमपरां संहितां दृष्टवन्तम् ।

पादे नित्यप्रणिहितधियं पादुके रङ्गभर्तु -

स्त्वन्नामानं मुनिमिह भजे त्वामहं स्तोतुकामः ॥३॥

दिव्यस्थानात् त्वमिव जगतीं पादुके गाहमाना

पादन्यासं प्रथममनघा भारती यत्र चक्रे ।

योगक्षेमं सकलजगतां त्वय्यधीनं स जानन्

वाचं दिव्यां दिशतु वसुधाश्रोत्रजन्मा मुनिर्मे ॥४॥

नीचेऽपि हन्त मम मूर्धनि निर्विशेषं

तुङ्गेऽपि यन्निवेशते निगमोत्तमाङ्गे ।

प्राचेतसप्रभृतिभिः प्रथमोपगीतं

स्तोष्यामि रङ्गपतिपादुकयोर्युगं तत् ॥५॥

धत्ते मुकुन्दमणिपादुकयोर्निवेशाद्

वल्मीकसम्भवगिरा समतां ममोक्तिः ।

गङ्गाप्रवाहपतितस्य कियानिव स्याद्

रथ्योदकस्य यमुनासलिलाद् विशेषः ॥६॥

विज्ञापयामि किमपि प्रतिपन्नभीतिः

प्रागेव रङ्गपतिविभ्रमपादुके त्वाम् ।

व्यङ्क्तुं क्षमाः सदसती विगताभ्यासूयाः

सन्तः स्पृशन्तु सदयैर्हृदयैः स्तुतिं ते ॥७॥

अश्रद्दधानमपि नन्वधुना स्वकीये

स्तोत्रे नियोजयसि मां मणिपादुके त्वम् ।

देवः प्रमाणमिह रङ्गपतिस्तथात्वे

तस्यैव देवि पदपङ्कजयोर्यथा त्वम् ॥८॥

यदाधारं विश्वं गतिरपि च यस्तस्य परमा

तमप्येका धत्से दिशसि च गतिं तस्य रुचिराम् ।

कथं सा कंसारेर्द्रुहिणहरदुर्बोधमहिमा

कवीनां क्षुद्राणां त्वमसि मणिपादु स्तुतिपदम् ॥९॥

श्रुतप्रज्ञासम्पन्महितमहिमानः कतिकति

स्तुवन्ति त्वां सन्तः श्रुतिकुहरकण्डूहरगिरः ।

अहन्त्वल्पस्तद्वद्यदिह बहु जल्पामि तदपि

त्वदायत्तं रङ्गक्षितिरमनपादावनि विदुः ॥१०॥

यदेष स्तौमि त्वां त्रियुगचरनत्रायिणि ततो

महिम्नः का हानिस्तव मम तु सम्पन्निरवधिः ।

शुना लीढा कामं भवतु सुरसिन्धुर्भगवती

तदेषा किम्भूता स तु सपदि सन्तापरहितः ॥११॥

मितप्रेक्षालाभक्षणपरिणमत्पञ्चषपदा

मदुक्तिस्त्वय्येषा महितकविसंरम्भविषये ।

न कस्येयं हास्या हरिचरणधात्रि क्षितितले

मुहुर्वात्याधूते मुखपवनविष्फूर्जितमिव ॥१२॥

निस्सन्देहनिजापकर्षविषयोत्कर्षोऽपि हर्षोदय -

प्रत्यूढक्रमभक्तिवैभवभवद्वैयात्यवाचालितः ।

रङ्गाधीशपदत्रवर्ननकृतारम्भैर्निगुम्भैर्गिरां

नर्मास्वादिषु वेङ्कटेश्वरकविर्नासीरमासीदति ॥१३॥

रङ्गक्ष्मापतिरत्नपादु भवतीं तुष्टूषतो मे जवा -

ज्जृम्भन्तां भवदीयशिञ्जितसुधासन्दोहसन्देहदाः ।

श्लाघाघूर्णितचन्द्रशेखरजटाजङ्घालगङ्गापय -

स्नासादेशविशृङ्खलप्रसरणोत्सिक्ताः स्वयं सूक्तयः ॥१४॥

हिमवन्नलसेतुमध्यभाजां भरताभ्यर्चितपादुकावतंसः ।

अतपोधनधर्मतः कवीनामखिलेष्वस्मि मनोरथेष्वबाह्यः ॥१५॥

अनिदम्प्रथमस्य शब्दराशेरपदं रङ्गधुरीणपादुके त्वाम् ।

गतभीतिरभिष्टुवन् विमोहात् परिहासेन विनोदयामि नाथम् ॥१६॥

वृत्तिभिर्बहुविधाभिराश्रिता वेङ्कटेश्वरकवेः सरस्वती ।

अद्य रङ्गपतिरत्नपादुके नर्तकीव भवतीं निषेवताम् ॥१७॥

अपारकरुणाम्बुधेस्तव खलु प्रसादादहं

विधातुमपि शक्नुयां शतसहस्रिकां संहिताम् ।

तथापि हरिपादुके तव गुणौघलेशस्थिते -

रुदाहृतिरियं भवेदिति मिताऽपि युक्ता स्तुतिः ॥१८॥

अनुकृतनिजनादां सूक्तिमापादयन्ती

मनसि वचसि च त्वं सावधाना मम स्याः ।

निशमयति यथाऽसौ निद्रया दूरमुक्तः

परिषदि सह लक्ष्म्या पादुके रङ्गनाथ ॥१९॥

त्वयि विहिता स्तुतिरेषा पदरक्षिणि भवति रङ्गनाथपदे ।

तदुपरि कृता सपर्या नमतामिव नाकिनां शिरसि ॥२०॥

इति कवितार्किकसिंहस्य सर्वतन्त्रस्वतन्त्रस्य श्रीमद्वेङ्कटनाथस्य वेदान्ताचार्यस्य कृतिषु

श्रीरङ्गनाथपादुकासहस्रे प्रस्तावपद्धतिः प्रथमा ॥

श्री रंगनाथपादुकासहस्रं का श्लोक 1

सन्तः श्रीरङ्गपृथ्वीशचरणत्राणशेखराः ।

जयन्ति भुवनत्राणपदपङ्कजरेणवः ॥१॥

अर्थ

श्री रंगनाथ भगवान् की पादुका को (भगवान् के श्रीशठकोप को) महापुरुष , बहुत ही अच्छे ढंग से अपने मस्तक पर धारण करते हैं ।

इसी कारण से महापुरुषों की महिमा हैं ,इसलिए महापुरुषों की चरणों की धूल पूरी दुनिया को संरक्षण एवं मोक्ष भी प्रदान करने में पूरी तरह से सक्षम हैं।

विशिष्ट टीका:-

1) यहाँ पद्धति का वस्तुतः अर्थ पदचिन्ह से है। स्वामी श्री वेदांत देशिक ने इस महाकाव्य की कल्पना, श्री रंगनाथ भगवान् की पवित्र पादुका के 32 चरणों की शुभ ध्वनि को स्मरण करके की हैं। जिसकी ध्वनि श्रीशठकोप स्वामी (श्री नम्मालवार) के सहस्रगीति के गान के समान ही हैं।

2) प्रस्तावना पद्धति 32 चरणों में से पहला चरण हैं। संख्या 32 का हमारे संप्रदाय में बहुत महत्व हैं।

(भगवान् की आराधना में 32 अपचार टालने चाहिए ,32 ब्रह्मविद्या हैं।

भगवान् की कृपा प्राप्ति के लिए किन वस्तुओं का हमें त्याग करना चाहिए और किन वस्तुओं का संग्रह करना चाहिए उसका ज्ञान हमें यहाँ प्राप्त होता हैं ।

(i) भगवान् की सेवा मे परिहार्य 32 अपराध (वराह पुराण अध्याय 117)

भगवान् वराह कहते हैं -

1 अकर्मण्यानि वक्ष्यामि येन भोज्यंति मां प्रति ॥
तेन वै भुक्तमार्गेण अपराधो महौजसः ॥
प्रथमं चापराधान्नं न रोचेत मम प्रिये ॥

जो मुझे अपवित्र वस्तुएँ भी निवेदित करके खाता है , वह धर्म व मुक्ति-परंपरा के विरुद्ध अपराध करता है , चाहे वह महान तेजस्वी ही क्यूँ न हो , यह मेरे प्रति उसका प्रथम अपराध हैं ।

2.भुक्त्वा तु परकीयान्नं तत्परस्तन्निवर्त्तनः ।
द्वितीयस्त्वपराधोऽयं धर्मविघ्नाय वै भवेत् ॥

अपराधी का अन्न मुझे बिलकुल नही रुचता , जो दूसरे का अन्न खाकर मेरी सेवा या उपासना करता है , यह दूसरा अपराध हैं ।

3.गत्वा मैथुनसंयोगं यो नु मां स्पृशते नरः ।
तृतीयमपराधं तु कल्पयामि वसुंधरे ॥

जो मनुष्य स्त्री संग करके मेरा स्पर्श करता हैं , उसके द्वारा होनेवाला यह उसका तीसरा सेवा- अपराध हैं ।

4.दृष्ट्वा रजस्वलां नारीमस्माकं यः प्रपद्यते ।
चतुर्थमपराधं तु दृष्टं नैव क्षपाम्यहम् ॥

वसुंधरे ! जो रजस्वला नारी को देखकर मेरी पूजा करता हैं , में इसे चतुर्थ अपराध मानता हूँ ।

5.स्पृष्ट्वा तु मृतकं चैव असंस्कारकृतं तु वै ।
पंचमं चापराधं च न क्षमामि वसुंधरे ॥

जो मृतक का स्पर्श करके अपने शरीर को शुद्ध नही करता और अपवित्रतावस्था मे ही मेरी सपर्या मे लग जाता हैं , यह पांचवा अपराध हैं , जिसे में क्षमा नही करता ।

6.दृष्ट्वा तु मृतकं यस्तु नाचम्य स्पृशते तु माम् ।
षष्ठं तं चापराधं वै न क्षमामि वसुंधरे ॥

वसुंधरे ! मृतक को देखकर बिना आचमन किए मेरा स्पर्श करना छठा अपराध हैं ।

7.ममार्चनस्य काले तु पुरीषं यस्तु गच्छति ।
सप्तमं चापराधं तु कल्पयामि वसुंधरे ॥

पृथ्वी ! यदि उपासक मेरी पूजा के बीच मे ही शौच के लिए चला जाए तो यह मेरी सेवा का सातवां अपराध हैं ।

8.यस्तु नीलेन वस्त्रेण प्रावृतो मां प्रपद्यते ।
अष्टमं चापराधं च कल्पयामि वसुन्धरे ॥

वसुंधरे ! जो नीले वस्त्र से आवृत्त होकर मेरी सेवा मे उपस्थित होता है , यह उसके द्वारा आचरित होने वाला आठवां सेवा-अपराध हैं ।

9.ममैवार्च्चनकाले तु यस्त्वसमं प्रभाषते ।
नवमं चापराधं तं न रोचामि वसुन्धरे ॥

जगत को धारण करने वाली पृथ्वी ! जो मेरी पूजा के समय अनुचित-अनर्गल बातें कहता हैं , यह मेरी सेवा का नवां अपराध हैं ।

10.अविधानं तु यः स्पृश्य मामेव प्रतिपद्यते ।
दशमश्चापराधोऽयं मम चाप्रियकारकः ॥

वसुंधरे ! जो शास्त्र विरुद्ध वस्तु का स्पर्श करके मुझे पाने के लिए प्रयत्नशील रहता हैं , उसका यह आचरण दसवां अपराध माना जाता हैं ।

11.क्रुद्धस्तु यानि कर्माणि कुरुते कर्मकारकः ।
एकादशापराधं तु कल्पयामि वसुंधरे ॥

जो व्यक्ति क्रोध मे आकर मेरी उपासना करता हैं , यह मेरी सेवा का ग्यारहवां अपराध हैं , इससे में अत्यंत अप्रसन्न होता हूँ ।

12.अकर्मण्यानि पुण्यानि यस्तु मामुपकल्पयेत् ।
द्वादशं चापराधं तं कल्पयामि वसुंधरे ॥

वसुंधरे ! जो निषिद्ध कर्मो को पवित्र मानकर मुझे निवेदित करता हैं , यह उसका बारहवां अपराध हैं ।

13.यस्तु रक्तेन वस्त्रेण कौसुम्भेनोपगच्छति ।
त्रयोदशं चापराधं कल्पयामि वसुन्धरे ॥

जो लाल वस्त्र या कौसुम्भ रंग (वनकुसुम से रंगे) के वस्त्र पहनकर मेरी सेवा करता हैं यह उसका तेरहवां सेवा-अपराध हैं ।

14.अन्धचतुर्दशापराधं तु कल्पयामि वसुन्धरे ।
अंधकारे च मां देवि यः स्पृशेत कदाचन ॥

धरे ! जो अंधकार मे मेरा स्पर्श करता हैं , उसे मैं चौदहवां सेवा-अपराध मानता हूँ ।

15.यस्तु कृष्णेन वस्त्रेण मम कर्माणि कारयेत् ।
अपराधं पंचदशं कल्पयामि वसुंधरे ॥

वसुंधरे ! जो मनुष्य काले वस्त्र धारण कर मेरे कार्यों का सम्पादन करता हैं , वह उसका पंद्रहवाँ अपराध हैं ।

16.अधौतेन तु वस्त्रेण यस्तु मामुपकल्पयेत् ।
षोडशं त्वपराधानां कल्पयामि वरानने ॥

जगद्धात्रि ! जो बिना धोये कपड़ों को पहने हुए मेरी उपचर्या मे संलग्न होता हैं , उसके द्वारा आचरित इस अपराध को मै सोलहवां अपराध मानता हूँ ।

17.स्वयमन्नं तु यो ह्ययादज्ञानादपि माधवि ।
अपराधं सप्तदशं कल्पयामि वसुन्धरे ॥

माधवि ! अज्ञानवश जो स्वयं पकाकर बिना मुझे अर्पण किए खा लेता हैं , यह उसका सत्रहवाँ अपराध हैं ।

18.यस्तु मात्स्यानि मांसानि भक्षयित्वा प्रपद्यते ।
अष्टादशापराधं च कल्पयामि वसुंधरे ॥

वसुंधरे ! जो अभक्ष्य भक्षण (मत्स्य-मांस इत्यादि) करके मेरी शरण मे आता है , उसके इस आचरण को में अठारहवाँ सेवा-अपराध मानता हूँ ।

19.जालपादं भक्षयित्वा यस्तु मामुपसर्पति ।
एकोनविंशापराधं कल्पयामि वसुंधरे ॥

वसुंधरे ! जो जालपाद (बतख) का मांस भक्षण करके मेरे पास आता हैं , उसका यह कर्म मेरी दृष्टि में उन्नीसवाँ अपराध हैं ।

20.यस्तु मे दीपकं स्पृष्ट्वा मामेव प्रतिपद्यते।
विंशकं चापराधं तं कल्पयामि वरानने ॥

जो दीपक का स्पर्श कर बिना हाथ धोये ही मेरी उपासना मे संलग्न हो जाता हैं , जगद्धात्रि ! उसका वह कर्म मेरी सेवा का बीसवां अपराध हैं ।

21.श्मशानं यस्तु वै गत्वा मामेव प्रतिपद्यते।
एकविंशापराधं तं कल्पयामि वसुन्धरे ॥

वरानने ! जो श्मशान मे भूमि जाकर बिना शुद्ध हुए मेरी सेवा में उपस्थित हो जाता हैं , वह मेरी सेवा का इक्कीसवाँ अपराध हैं ।

22.पिण्याकं भक्षयित्वा तु यो मामेवाभिगच्छति।
द्वाविंशं चापराधं तं कल्पयामि प्रिये सदा ॥

वसुंधरे ! बाइसवां अपराध वह हैं , जो पिण्याक (हींग) भक्षण कर मेरी उपासना मे उपस्थित होता हैं ।

23.यस्तु वाराहमांसानि प्रापणेनोपपादयेत् ।
अपराधं त्रयोविंशं कल्पयामि वसुन्धरे ॥

देवी ! जो सूअर आदि के मांस को प्राप्त करने का यत्न करता हैं , उसके इस कार्य को मै तेइसवां अपराध मानता हूँ ।

24.सुरां पीत्वा तु यो मर्त्यः कदाचिदुपसर्पति।
अपराधं चतुर्विंशं कल्पयामि वसुन्धरे ॥

जो मनुष्य मदिरा पीकर मेरी सेवा मे उपस्थित हो जाता हैं , वसुंधरे ! मेरी दृष्टि मे यह चौबीसवाँ अपराध हैं ।

25.अपराधं पंचविंशं कल्पयामि वसुन्धरे।
यः कुसुम्भं च मे शाकं भक्षयित्वोपचक्रमे ॥

जो कुसुंभ (करमी) का शाक खाकर मेरे पास आता हैं , देवि ! यह मेरी सेवा का पच्चीसवाँ अपराध हैं।

26.परप्रावरणेनैव यस्तु मामुपसर्पति ।
अपराधेषु षड्विंशं कल्पयामि वसुन्धरे ॥

पृथ्वी ! जो दूसरे के वस्त्र पहनकर मेरी सेवा मे उपस्थित होता है , उसके इस कर्म को में छब्बीसवाँ अपराध मानता हूँ।

27.नवान्नं यस्तु भक्षेत न देवान्न पितॄन्यजेत् ।
सप्तविंशं चापराधं कल्पयामि गुणान्विते ॥

वसुंधरे ! सेवापराधों मे सत्ताइसवां अपराध वह हैं , जो नया अन्न उत्पन्न होने पर उसके द्वारा देवताओं और पितरों का यजन न कर उसे स्वयं खा लेता है ।

28.उपानहौ च प्रपदे तथा वापीं च गच्छति ।
अपराधं त्वष्टविंशं कल्पयामि गुणान्विते ॥

देवि ! जो व्यक्ति जूता पहनकर किसी जलाशय या बावडी पर चला जाता हैं , उसके इस कार्य को में अठाईसवां अपराध मानता हूँ।

29.शरीरं मर्द्दयित्वा तु यो मामाप्नोति माधवि।
एकोनविंशापराधो न स स्वर्गेषु गच्छति ॥

गुणशालिनि ! शरीर मे उबटन लगाकर , जो बिना स्नान किए मेरे पास चला आता हैं , यह उन्तीसवां सेवा-अपराध हैं ।

30.अजीर्णेन समाविष्टो यस्तु मामुपगच्छति ।
त्रिंशकं चापराधं तं कल्पयामि यशस्विनि ॥

जो पुरुष अजीर्ण से ग्रस्त होकर मेरे पास आता हैं , उसका यह कार्य मेरी सेवा का तीसवाँ अपराध हैं ।

31.गन्धपुष्पाण्यदत्त्वा तु यस्तु धूपं प्रयच्छते।
एकत्रिंशं चापराधं कल्पयामि मनस्विनि ॥

यशश्विनी ! जो पुरूष मुझे चन्दन और पुष्प अर्पण किए बिना पहले धूप देने मे ही तत्पर हो जाता हैं , उसके इस अपराध को में इकतीसवाँ अपराध मानता हूँ ।

32.विना भेर्यादिशब्देन द्वारस्योद्घाटनं मम ॥
महापराधं जनीयाद्द्वात्रिंशं तं मम प्रिये ॥

मनस्विनि ! मंगल शब्द किए बिना ही मेरे मंदिर के द्वार को खोलना बत्तीसवाँ अपराध हैं । देवि ! इस बत्तीसवे अपराध को महापराध समझना चाहिए ।

(ii) 32 ब्रह्म विद्या के प्रकार

(1). **सद्विद्या**-परब्रह्म अपने सङ्कल्पानुसार सबके कारण हैं ,

(2). **आनन्दविद्या**-वे कल्याण गुणाकर वैभव सम्पन्न आनन्दमय हैं ,

(3). **अन्तरादित्य विद्या**-उनका रूप दिव्य हैं ,

(4). **आकाशविद्या**-उपाधिरहित होकर वे सबके प्रकाशक हैं ,

(5). **प्राणविद्या**-वे चराचर के प्राण

(6). **गायत्री-ज्योतिर्विद्या**-वे प्रकाशमान हैं ,

(7). **इंद्र-प्राणविद्या**-वे इन्द्र, प्राण आदि चेतना चेतनों के आत्मा हैं ,

(8). **शाण्डिल्य-विद्या**-अग्निरहस्य-प्रत्येक पदार्थ की सत्ता, स्थिति एवं यत्न उनके ही अधीन हैं ,

(9). **नचिकेता-सविद्या**-उनमें समस्त संसार को लीन करने की सामर्थ्य हैं ,

(10). **उपकोसलविद्या**-उनकी स्थिति उनके नेत्र में हैं ,

(11). **अन्तर्यामी-विद्या**-जगत उनका शरीर हैं ,

(12). **अक्षरविद्या**-उनके विराट रूप की कल्पना में अग्नि आदि अङ्ग बनकर रहते हैं ,

(13). **वैश्वानर-विद्या**-स्वर्लोक, आदित्य आदि के अङ्गी बने हुए वे वैश्वानर हैं ,

(14). **भूमा-विद्या**-वे अनन्त ऐश्वर्य सम्पन्न हैं ,

(15). **गार्ग्यक्षर-विद्या**-वे नियन्ता हैं ,

(16). **प्रणवोपास्य-परमपुरुष-विद्या**-वे मुक्त पुरुषों के योग्य हैं ,

(17). **दहरविद्या**-वे सबके आधार हैं ,

(18). **अंगुष्ठ-प्रमित-विद्या**-वे अन्तर्यामी रूप से सबके हृदय में विद्यमान हैं ,

(19). **देवोपास्य-ज्योतिर्विद्या**-वे सभी देवताओं के उपास्य हैं ,

(20). **मधु-विद्या**-वे वसु, आदित्य, मरुत् और साध्यों के आत्मा के रूप में उपास्य हैं ,

(21). **संवर्ग-विद्या**-अधिकारानुसार वे सभी के उपास्य हैं ,

(22). **अजाशरीर-विद्या**-वे प्रकृति तत्व के नियन्ता हैं ,

(23). **बालाकि-विद्या**--समस्त जगत् उनका कार्य हैं ,

(24). **मैत्रयी-विद्या**-उनका साक्षात्कार कर लेना मोक्ष का साधन हैं ,

(25).**द्रुहिण-रुद्रादि-शरीर-विद्या**--ब्रह्मा, रूद्र आदि-आदि देवताओं के अन्तर्यामी होने के कारण उन-उन देवताओं की उपासना उन्हीं की उपासना द्वारा होती हैं ,

(26). **पंचाग्नि-विद्या**-संसार के बन्धन से मुक्ति उनके अधीन हैं ,

(27). **आदित्य-स्थाहर्नामक-विद्या**--वे आदित्य मण्डलस्थ हैं ,

(28). **अक्षीस्थाहन्नामक विद्या**-वे पुण्डरीकाक्ष हैं ,

(29). **पुरुष-विद्या**--वे परम पुरुष, पुरुषोत्तम हैं ,

(30). **ईशावास्य-विद्या**-वे कर्म सहित उपासनात्मक ज्ञान के द्वारा प्राप्त होने वाले हैं,

(31). **उषस्तिकहोल-विद्या**-भोजनादि विषयक नियम भी उनके प्राप्त करने में अनिवार्य होते हैं और

(32). **व्याहृतिशरीरक-विद्या**-व्याहृतियों की आत्मा बनकर वे मंत्रमय हैं।

3) श्रीरंगम् के भगवान् को यहां "श्रीरङ्गपृथ्वीश " के रूप में नमस्कार किया गया है। जो कि सभी 32 वैष्णव सिद्धांतों का एकीकृत सार हैं (जो कि पृथ्वी से शुरू होकर महत लोक तक 23 हैं और बाकी शेष इस प्रकार हैं :- 24 अव्यक्त ,25 अक्षर (अविनाशी), 26 तामस , 27 काल ,28 नित्य विभूति (शाश्वत महिमा) ,29 धर्मभूत ज्ञान द्रव्य (जिसमें ज्ञान का भण्डार निहित हैं) , 30 जीवन , 31 महालक्ष्मी एवं 32 उनके दिव्य परिकर, श्रीमन्नारायण भगवान्। इस श्लोक में पृथ्वी से लेकर ईश तक को नमस्कार किया गया हैं "श्रीरङ्गपृथ्वीश"। इस श्लोक के मूल शब्द हैं सन्तः जयन्ति , इसमें स्वामी श्री वेदांत देशिक यह संदेश देते हैं कि ऐसे महात्माओं की विजय हो।

4) वे क्यों विजयी होते हैं ? वे अपने मस्तक पर भक्ति भाव से भगवान् की दिव्य पादुकाएं (श्रीशठकोप) धारण करते हैं । जो पादुकाएं भगवान् श्री रंगनाथ के पवित्र चरणों की रक्षा करती हैं । वे दिव्य पादुकायें उन महात्माओं की रक्षा भी करती हैं।

5) इन महात्माओं का भगवान् की दिव्य पादुकाओं (श्रीशठकोप) को अपने मस्तक पर धारण करने का महत्व क्या हैं ?

तथ्य यह हैं कि उनके द्वारा दिव्य पादुकाओं को अपने मस्तक पर धारण करने से उन महात्माओं के चरणों की धूल भी इस संसार का कल्याण करती हैं।

6) आंतरिक अर्थ :- वे महान आत्माएं जो नम्मालवार (श्रीशठकोप) का सम्मान करती हैं और उनके अनुष्ठान करती हैं , वे सद्गति को प्राप्त होती हैं। और उसी क्षण दूसरों को भी सकल पुरुषार्थ प्राप्ति का आशीर्वाद भी प्रदान करती हैं।

श्री रंगनाथ पादुका सहस्रं का श्लोक 2

भरताय परं नमोऽस्तु तस्मै प्रथमोदाहरणाय भक्तिभाजाम् ।

यदुपज्ञमशेषतः पृथिव्यां प्रथितो राघवपादुकाप्रभावः ॥२॥

अर्थ

मैं उन महान पथ प्रदर्शक "भरत" को मेरी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं, जो इस दुनिया में श्री राम जी की पादुका की महानता का प्रचार करने वाले पहले उदाहरण बने हैं । मेरी श्रद्धांजलि श्रीनाथ मुनि स्वामी को भी है , जो नम्मालवार के लिए भरत के समान थे, जैसे भरत जी श्री राघवपादुका के लिए थे। और वास्तव में नाथमुनि स्वामी ने तो ताल और अभिनय के साथ गा-गाकर आलवारों के संदेश का प्रचार किया था। जो भाव ,राग और ताल से परिपूर्ण था। यह वैसा ही था जैसा भरतमुनि ने नृत्य की कला के लिए किया था।

विशिष्ट टीका:-

1 "भरत" नाम यहां पर दोनों भरत आलवार (श्री राम के भाई एवं नाथमुनि स्वामी) के लिए संबोधित किया गया हैं। नाथमुनि, जिन्हें संकल्प सूर्योदय के पहले अध्याय के 25 वें श्लोक में भरत रूप से नमन किया गया हैं । नाथमुनि स्वामी भाव , राग और ताल में प्रतिष्ठित थे इसलिए उन्हें यहां पर "भरत" कहा गया हैं ।

2 इसमें पहले प्रसिद्ध व्यक्ति जिन्होंने श्री रामचंद्र जी की दिव्य पादुकाएं अपने मस्तक पर धारण की वे उनके भाई भरत थे। जब श्री राम जी 14 वर्षों के वनवास पर थे तब भरत जी ने श्री राम जी की पादुकाओं के प्रतिनिधि के रूप में राज्य के कार्य को संचालित किया था। इस तरह भरत जी पहले धन्य महात्मा बने जिन्होंने भगवान् की पादुकाओं के वैभव को प्रदर्शित किया और उनकी महिमा का संदेश फैलाया।

3 नाथमुनि स्वामी (भरत) ने नम्मालवार (श्री रंगनाथ भगवान् की मणि पादुकाओं) का वैभव पूरी दुनिया में दिव्य तिरुवाय्मोऴि का अभिनय पढ़ाकर एवं उसे संगीत के माध्यम से फैलाया।

4 इस श्लोक के मूल शब्द हैं "भरताय परं नमोऽस्तु" (मेरा नमस्कार भरत के लिए हो) पूजनीय भरत जी के लिए विशेषण है "भक्तिभाजाम् प्रथमोदाहरणाय भरताय"। श्री राघव पादुकाओं के प्रति समर्पण के भरत जी पहले उदाहरण हैं।

श्री रंगनाथ पादुका सहस्रं का श्लोक 3

वर्णस्तोमैर्वकुलसुमनोवासनामुद्वहन्ती -

माम्नायानां प्रकृतिमपरां संहितां दृष्टवन्तम् ।

पादे नित्यप्रणिहितधियं पादुके रङ्गभर्तु -

स्त्वन्नामानं मुनिमिह भजे त्वामहं स्तोतुकामः ॥३॥

अर्थ

ओह पादुका देवी ! मैं स्तोत्र के प्रारंभ में उन संत नम्मालवार को नमस्कार करता हूं , जो आपका नाम धारण करते हैं । (श्री शठारि जो श्री रंगनाथ भगवान् के चरणों में पूरी तरह लीन रहते हैं), क्योंकि उन्होंने तिरुवाय्मोळि नामक वेद स्वरूप को देखा और आगे पहुंचाया। तिरुवाय्मोळि, वेद का रूप है और जिसके श्लोकों और शब्दों से वकुल पुष्पों की सुगंध आती हैं जोकि आल्वरों को बहुत प्रिय हैं ।

विशिष्ट टीका:-

1 इस श्लोक में मूल शब्द हैं "हे पादुके ! त्वन्नामानं मुनिमिह भजे" हे पादुके! मैं उन ऋषि नम्मालवार को प्रणाम करता हूं जो आप का नाम धारण करते हैं ।

2 उन मुनि की योग्यता हैं "रङ्गभर्तुः पादे नित्यप्रणिहितधियं" (ऐसे आलवार जिन्होंने श्री रंगनाथ भगवान् के पवित्र चरणों में हमेशा अपना ध्यान लगाया हैं ।)

"आम्नायानां अपरां प्रकृतिम् संहितां दृष्टवन्तम्"

(ऐसे आलवार , जिन्होंने तिरुवाय्मोऴि नामक तमिल वेदों की खोज की थी " वेदम् तमिऴ् शेय्द मारन् ")

3 इस तमिल वेद संहिता का चरित्र चित्रण कैसे होगा ? तिरुवाय्मोऴि के सभी श्लोक वकुलपुष्प की सुगंध से पूरी तरह मिले हुए हैं। वकुलाभरनार के ये तमिल ग्रंथ वैदिक मंत्रों की सुगंध से ओतप्रोत हैं।

4 स्वामी श्री वेदांतदेशिक बताते हैं कि वैदिक मंत्रों ने , वकुलपुष्प की सुगंध से मिश्रित होकर श्री रंगनाथ भगवान् की दिव्यमणिपादुकाओं में अपना आश्रय प्राप्त किया हैं।

5 स्वामी श्री वेदांतदेशिक , नम्मालवार को संबोधित करते हुए कहते हैं , वे उन मुनि को प्रसन्न करने की इच्छा करते हैं। हे पादुके! अहम् त्वां स्तोतुकामः
स्वामी श्री वेदांत देशिक यह प्रार्थना श्री नम्मालवार को अर्पित करते हैं ताकि वे बिना किसी विघ्न के इस स्तुति को पूरा करने के लिए उन्हें आशीर्वाद प्रदान कर सकें।

श्री रंगनाथपादुकासहस्रं का श्लोक 4

दिव्यस्थानात् त्वमिव जगतीं पादुके गाहमाना

पादन्यासं प्रथममनघा भारती यत्र चक्रे ।

योगक्षेमं सकलजगतां त्वय्यधीनं स जानन्

वाचं दिव्यां दिशतु वसुधाश्रोत्रजन्मा मुनिर्मे ॥४॥

अर्थ

हे पादुके ! काश मैं भी संत श्री वाल्मीकि जी की तरह एक अच्छी काव्य क्षमता के साथ संपन्न हो सकूं ,जो वाल्मीकि जी एक चीटियों की बांबी से उत्पन्न हुए हैं (यहां पर पृथ्वी या धरती माता के कान के रूप में इसे बताया गया हैं। जिन्होंने श्री रामायण में यह भविष्यवाणी की थी कि सभी लोकों का वैभव तथा योग और क्षेम भगवान् की पादुकाओं पर निर्भर हैं और पादुका, आप ही यह सब प्रदान करने वाली हो। वाल्मीकि जी ,सरस्वती देवी (विद्या की देवी) का इस धरती पर रखे जाने वाले पहले चरण के रूप में थे। (वाल्मीकि जी , संस्कृत में कविता के पहले रचयिता हैं।)

विशिष्ट टीका:-

1 इस श्लोक में श्री वेदांत देशिक स्वामी, आदि कवि संत श्री वाल्मीकि जी के आशीर्वाद के लिए प्रार्थना करते हैं , जिन्होंने प्राचीन प्रसिद्ध महाकाव्य श्री रामायण की रचना की थी। इससे पहले वाले श्लोक में स्वामी श्री वेदांत देशिक जी ने द्रविड़-वेद-संहिता-दृष्टा स्वामी श्री नम्मालवार के अनुग्रह की प्रार्थना की थी। यहां स्वामी श्री वेदांतदेशिक श्रीरामचंद्र भगवान् के कुलदेवता श्री

रंगनाथ भगवान् की पादुकाओं पर संस्कृत कविता की रचना में सहायता के लिए ऋषि श्री वाल्मीकि जी के आशीर्वाद की प्रार्थना करते हैं । स्वामी श्री वेदांत देशिक अर्थ और सुंदरता में समृद्ध, संस्कृत रचना के उपहार के लिए प्रार्थना करते हैं ।

2 इस श्लोक में स्वामी श्री वेदांतदेशिक श्री रंगनाथ भगवान् की पादुकाओं को याद करते हुए कहते हैं कि सरस्वती देवी ने अपने धाम सत्यलोक से इस पृथ्वी पर श्री वाल्मीकि जी को श्रीमद् रामायण की रचना करने के लिए आशीर्वाद देने हेतु प्रवेश किया था । यहां पर स्वामी श्री वेदांतदेशिक जी श्री रंगनाथ भगवान् की पादुकाओं से आग्रह करते हैं जो पादुका श्रीवैकुंठ से श्रीरंगम् में अवतरित हुई थी , कि वह भी ठीक उसी तरह उन्हें पादुकासहस्र की रचना करने के प्रयासों में आशीर्वाद प्रदान करें । स्वामी श्री वेदांत देशिक दिव्य पादुकाओं को याद दिलाते हैं कि उनकी महिमा तो भगवान् की अनुपस्थिति में भी महान हैं । इस संदर्भ में वे आगे लिखते हैं कि पादुकाओं ने भरत जी को भी आशीर्वाद दिया था जब वे अपने स्वामी श्री रामचंद्र जी के 14 वर्ष के वनवास के कारण दूर हो गए थे।

3 स्वमी श्री वेदान्त देशिक जी की ऋषि श्री वाल्मीकि जी से प्रार्थना इस प्रकार हैं :-

"वसुधाश्रोत्रजन्मा स: मुनिर्मे दिव्यां वाचं दिशतु"

4 स्वामी श्री वेदांत देशिक जी कहते हैं कि दिव्य पादुकाएं श्री रंगनाथ भगवान् को ब्रह्मा जी के सत्यलोक से अयोध्या लेकर आई थी। इसी प्रकार सरस्वती जी ने आपके ही उदाहरण का पालन किया जब वह सत्यलोक यानी ब्रह्माजी के लोक से अवतरित हुई और उन्होंने अपना पहला कदम श्री वाल्मीकि जी पर रखा। (भारती यत्र प्रथममनघा पादन्यासं चक्रे)जो कि यह दर्शाता हैं कि ऋषि श्री वाल्मीकि जी आदि काव्य में पहली बार ,भगवान् श्री रामचंद्र जी की पादुकाओं की महिमा का गान करते हैं ।

5 स्वामी श्री वेदांत देशिक जी ने ऋषि श्री वाल्मीकि जी को सबसे विद्वान व्यक्ति के रूप में श्रद्धांजलि अर्पित की हैं , जिन्होंने यह पूर्णतया समझ लिया कि संसार का योग-क्षेम भगवान् श्री रामचंद्र जी की पादुकाओं के नियंत्रण में ही हैं । (सकलजगतां योगक्षेमं त्वय्यधीनं स जानन्)

स्वामी श्री वेदान्त देशिक जी, ज्ञान ,शील एवं विद्वान वाल्मीकि जी से दिव्य ज्ञान और दिव्य वाक् प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं।(स:मुनि: दिव्यां वाचं दिशतु)

6 (सकलजगतां योगक्षेमं त्वय्यधीनं)योग का अर्थ हैं भगवान् की पादुका वह ऐश्वर्य प्रदान करती हैं जो किसी के पास नहीं हैं ,और क्षेम का अर्थ हैं भगवान् की पादुका उस ऐश्वर्य की रक्षा करती हैं जो आपके पास हैं ।भगवान् की पादुकाओं में व्यक्ति को योग और क्षेम दोनों प्रदान करने की शक्ति हैं । ऋषि श्री वाल्मीकि जी ने दिव्य पादुकाओं की इस शक्ति को पूर्णतया समझा था और इस तरह वह दिव्य पादुकाओं की योगक्षेम प्रदान करने वाली विशेषताओं का गौरव-गान करने वाले पहले व्यक्ति बने।

श्री रंगनाथ पादुका सहस्रं का श्लोक 5

नीचेऽपि हन्त मम मूर्धनि निर्विशेषं

तुङ्गेऽपि यन्निवेशते निगमोत्तमाङ्गे ।

प्राचेतसप्रभृतिभिः प्रथमोपगीतं

स्तोष्यामि रङ्गपतिपादुकयोर्युगं तत् ॥५॥

अर्थ

अब मैं भगवान् श्री रंगनाथ की पादुकाओं की प्रशंसा को गाने जा रहा हूं , जो सबसे पहले श्री वाल्मीकि जी तथा अन्य संतो द्वारा गाई गई थी । यह इस तथ्य से प्रोत्साहित होता हैं कि यह पादुकाएं ऊंच-नीच का कोई भेदभाव नहीं करती हैं और ये पादुकायें मुझ जैसे नीच के मस्तक पर तथा अत्यधिक सम्मानित उपनिषदों पर बिना किसी भेदभाव के कृपा करती हैं ।

विशिष्ट टीका:-

1 हंत! (कितना अद्भुत) स्वामी श्री वेदांत देशिक जी पवित्र पादुकाओं के चमत्कार से यहां आश्चर्यचकित हुए हैं ,जो निम्नतम लोगों के मस्तक और सबसे पवित्र उपनिषदों को अलंकृत करती हैं (वेदों के प्रमुख- वेदशिरस्) । स्वामी श्री वेदांत देशिक जी कहते हैं कि पादुकाएं

अधम लोगों के मस्तक एवं उन्नत वेदों के बीच कोई भी भेदभाव नहीं करती हैं ।(निर्विशेष या तारतम्य प्रदर्शित करती हैं ।)

2 स्वामी श्री वेदांत देशिक जी के द्वारा अपने आप को एक "नीच" मानना नैच्यानुसंधान विनम्रता का भाव हैं । जो भाव पूर्वाचार्यों एवं आलवारों द्वारा पहले भी अपनाया गया था ।

- अ) आलवंदार:- (अशुचिम् , अविनितम् , निर्दयम् ,अलज्जम् , माम् धिग्) मैं एक घमंडी , अपरिशुद्ध, निर्दयी और लज्जा हीन व्यक्ति हूं। हे भगवान् !आप मेरे निम्न गुणों के लिए मेरी भर्त्सना (निंदा)कीजिए।

  धिगशुचिमविनीतम् निर्दयम् मामलज्जम्
  परमपुरुष योऽहम् योगिवर्याग्रगण्यै:।
  विधि-शिव-सनकाद्यैर्ध्यातुमत्यन्तदूरम्
  तव परिजनभावम् कामये कामवृत:॥ ॥ (स्तोत्र रत्न श्लोक 47)

- ब) आलवंदार:- (न धर्मनिष्ठोऽस्मि न चात्मवेदी, न भक्तिमां) मैं कर्मयोग के सिद्धांत पर आधारित नहीं हूं , मुझ में आत्मज्ञान नहीं है , मैं आपके भक्तों से बहुत दूर हूं तथा मुझमें भक्ति योग के अभ्यास का भी अभाव हैं ।

  न धर्मनिष्ठोऽस्मि न चात्मवेदी,
  न भक्तिमांस्त्वच्चरणारविन्दे।
  अकिनञ्चनोऽनन्यगति:शरण्य !
  त्वत्पादमूलं शरणं प्रपद्ये॥ (स्तोत्र रत्न श्लोक 22)

- स) नीसनेन् निरैवोन्रुमिलेन् - नम्मालवार , मैं वास्तव में एक नीच हूं मुझ में थोड़ी सी भी पूर्णता नहीं हैं ।

- द) नोत्त नोन्बिलेन् नुन्नरिविलेन् - नम्मालवार , मेरे पास अनुष्ठान करने के लिए धन नहीं हैं और मेरे पास आप की महिमा समझने और गाने के लिए तीव्र बुद्धि भी नहीं हैं।

- य) सीलमिल्ला सिरियोन् - नम्मालवार (मैं इतना अधम हूँ कि मेरे पास बोलने के लिए कोई भी अच्छे गुण नही हैं)
  इसमें स्वामी श्री वेदान्त देशिक अपने आप को एक नीच माना हैं।

3 सबसे पहले आदि कवि श्री वाल्मीकि जी के द्वारा भगवान् की दोनों पादुकाओं की स्तुति की गई थी , उसके बाद सभी ने उनका अनुसरण किया था।(रङ्गपतिपादुकयोर्युगं)
यहाँ पर स्वामी श्री वेदान्त देशिक कहते हैं की वे भी उनका अनुसरण करते हुए भगवान् की दिव्य पादुकाओं की स्तुति , अयोग्य होने के उपरांत भी करेंगे।

4 "प्रथमोपगीतं" शब्द हमें सामवेद की छवि याद दिलाता हैं । भगवान् की पादुकाओं की महिमा सबसे पहले वाल्मीकि जी द्वारा गाई गई थी। ऋग्वेद ज्ञान से संबंधित हैं तथा सामवेद संगीत के रूप में, भक्ति ,पूजा और चिंतन से संबंधित हैं जो कि वाल्मीकि जी जैसे वन में रहने वाले संत के लिए उचित था। उहा धनम्, उह्या घनम् और अरण्य धनम्, ग्रामागेय घहनम में सामवेद के पूर्वचारिका और उत्तर चारिका को शामिल किया गया हैं। स्वामी श्री वेदान्त देशिक द्वारा वाल्मीकि जी की स्तुति को सामवेद कहना उचित लगता हैं ,(प्रथमोपगीतं) "वेदानां सामवेदोस्मि -भगवद् गीता "

5 "स्तोष्यामि":- स्वामी श्री वेदान्त देशिक पादुकाओं की स्तुति करने की घोषणा करते हैं , जो पादुका निम्नतम लोगो और महानतम लोगो के मस्तक पर धारण होकर अप्रसन्न नही होती हैं। ये तो इससे प्रसन्न होती हैं।

श्री रंगनाथ पादुका सहस्रं का श्लोक 6

धत्ते मुकुन्दमणिपादुकयोर्निवेशाद्

वल्मीकसम्भवगिरा समतां ममोक्तिः ।

गङ्गाप्रवाहपतितस्य कियानिव स्याद्

रथ्योदकस्य यमुनासलिलाद् विशेषः ॥६॥

अर्थ

भगवान् की पादुकाओं की प्रशंसा में मेरे शब्द श्री वाल्मीकि जी के पवित्र शब्दों के साथ बिना किसी भेदभाव के समान रूप से घुल मिल जाते हैं । जिस प्रकार गंगा नदी की धारा में गिरने वाला सामान्य सड़कों का पानी और यमुना नदी का पानी मिलने में कोई भिन्नता नहीं होती हैं ।

विशिष्ट टीका:-

1 श्री रंगनाथपादुकासहस्रं के पांचवे श्लोक में स्वामी श्री वेदांतदेशिक ने भगवान् की पादुकाओं के निवेशन को संदर्भित किया हैं की उस संबंध से कोई कैसे पवित्र हो जाता हैं । यह इस बात पर निर्भर नहीं करता कि कोई आध्यात्मिक उपलब्धियों में कितना नीचा या ऊँचा हैं । यहां पर स्वामी श्री वेदांतदेशिक मुकुंदमणि-पादुकाओं की महिमा की स्तुति करने की क्षमता का वर्णन करते हैं , स्वामी श्री वेदांतदेशिक कहते हैं की यदि वे कितने भी नीच क्यों न हो श्री रंगनाथ पादुकाओं की महिमा में उनके शब्द श्रीमद् वाल्मीकि रामायण जैसे गौरवशाली बन जाएंगे एवं वह स्तुति आदि कवि द्वारा रचित श्रीमद् रामायण के समान स्तर को प्राप्त होगी। जब कोई श्रीमद् रामायण का पारायण करता हैं तब वह सकल पुरुषार्थ प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्राप्त करता

है । श्री वेदांत देशिक स्वामी जी यह भी इंगित करते हैं कि उनका विषय , पादुका सहस्रं की पवित्रता श्री वाल्मीकि रामायण के पारायण से होने वाले अनुग्रह के समान अनुग्रह को प्रदान को करती हैं ।

2 इस संदर्भ में स्वामी श्री वेदांत देशिक कहते हैं "ममोक्तिः वल्मीकसम्भवगिरा समतां धत्ते" पादुका-स्तोत्रम् पर चर्चा करने वाले मेरे शब्द श्रीमद् रामायण के समान आदरणीय स्थान प्राप्त को करेंगे।

3 स्वामी श्री वेदांत देशिक इसको समझने के लिए हमें इसके अनुरूप एक उदाहरण प्रदान करते हैं ।वे पवित्र गंगा नदी में, सामान्य रूप से मिलने वाले बारिश के पानी तथा गंगा के प्रवाह में बहने वाले पवित्र यमुना नदी के पानी के मिलने के बाद उसमे अभेद को इंगित करते हैं ।
लोग मानते हैं कि पवित्र गंगा में प्रवेश करने के बाद पानी के दोनों अलग अलग स्रोतों में कोई अंतर नहीं होता हैं एवं मिश्रित जल को पवित्र गंगाजल के तुल्य मान्यता देते हैं ।
लोग गंगा के पानी और गंगा में संगम हुए यमुना के पानी तथा सड़क से आये हुए बारिश के पानी मे कोई भेद नहीं करते हैं ।

श्रीरंगनाथपादुकासहस्रं का श्लोक 7

विज्ञापयामि किमपि प्रतिपन्नभीतिः

प्रागेव रङ्गपतिविभ्रमपादुके त्वाम् ।

व्यङ्क्तुं क्षमाः सदसती विगताभ्यासूयाः

सन्तः स्पृशन्तु सदयैर्हृदयैः स्तुतिं ते ॥७॥

अर्थ

हे , प्रफुल्लित और महान पादुका देवी !

मैं प्रारंभ में ही आपको कुछ भय से नमस्कार करता हूं। काश विद्वान लोग, जो किसी भी काम में अच्छे या बुरे को देखने में सक्षम हैं , मेरे इस स्तोत्र की बिना किसी ईर्ष्या की भावना से तथा करुणा रूपी ह्रदय के साथ निरीक्षण करें ,यह पादुकासहस्रं स्तोत्र एक श्रद्धापूर्ण भाव के साथ लिखा जा रहा हैं ।

विशिष्ट टीका:-

1 स्वामी श्री वेदांत देशिक श्री रंगनाथ भगवान् की दिव्य पादुकाओं को "अप्पोदक्कु इप्पोदे सोल्लि वैत्तेन्" के भाव में संबोधित करते हैं । वे कहते हैं , हे पादुके ! मुझे आपके बारे में स्तुति लिखने के प्रयासों के परिणामों से भय हैं । इसलिए स्तुति की रचना प्रारंभ करने से पहले, मैं आपसे अपनी याचना सुनने का आग्रह करता हूं। पंडितों को प्रायःदोषदर्शी के रूप में जाना जाता हैं , कृपया मुझे आशीर्वाद प्रदान करें ताकि विवेक पूर्ण विद्वान एवं संत महात्मा मेरे प्रयासों

पर करुणा करें एवं मेरी स्तुति बिना ईर्ष्या भाव के सुने। मैं ऐसी आशा करता हूं की आपकी महिमा गाने के मेरे प्रयासों पर वे दया करें।

2 स्वामी श्री वेदांत देशिक इन विद्वान महात्माओं को इस तरह विशेषता देते हैं :- "सदसती व्यङ्क्तुं क्षमाः विगताभ्यासूयाः सन्तः" यह महान लोग शुभ तथा अशुभ तत्वों में आसानी से भिन्नता देख सकते हैं। वेदान्त देशिक स्वामी, पादुका से याचना करते हैं कि ये विद्वान उनकी स्तुति को करुणा से पूर्ण हृदय के साथ सुने " सदयैर्हृदयैः स्तुतिं स्पृशन्तु "।

3 स्पृशन्तु का शाब्दिक अर्थ किसी वस्तु को स्पर्श करना हैं। स्वामी श्री वेदांत देशिक स्पृशन्तु का प्रयोग श्री रंगनाथ पादुकाओं की स्तुति के संपर्क में आने के पहलू के संदर्भ में करते हैं ।

4 स्वामी श्री वेदांतदेशिक श्री रंगनाथ भगवान् की दिव्य पादुकाओं से अपना अपराध स्वीकार करते हैं कि उनके पादुकाओं के यशगान में स्तुति करना उनकी सीमाओं से परे हैं। वे कहते हैं कि वे इस कार्य को करने में संकोच महसूस कर रहे हैं।

वे पादुकाओं से आशीर्वाद की मांग करते हैं जिससे शिक्षित विद्वान उनके प्रयासों पर करुणा करें। स्वामी श्री वेदांत देशिक यह संकेत करते हैं कि वे ईर्ष्यालु तथा भेदभाव करने वाले विद्वानों की परवाह नहीं करते लेकिन केवल सच्चे और करुणामयी विद्वानों की चिंता करते हैं।

5 स्वामी श्री वेदांतदेशिक पादुकाओं को "रङ्गपतिविभ्रमपादुके" के रूप में प्रणाम करते हैं। विभ्रम का अर्थ हैं इधर-उधर घूमना या यहां-वहां अठखेलियां करने से हैं । वे इंगित करते हैं कि पादुकाएं भगवान् को एक जगह से दूसरी जगह उनके लक्ष्य के लिए जाने का आनंद प्रदान करने के लिए हैं। (भक्तरक्षण और दुष्ट निग्रहण।)

श्री रंगनाथ पादुका सहस्रं का श्लोक 8

अश्रद्धानमपि नन्वधुना स्वकीये

स्तोत्रे नियोजयसि मां मणिपादुके त्वम् ।

देवः प्रमाणमिह रङ्गपतिस्तथात्वे

तस्यैव देवि पदपङ्कजयोर्यथा त्वम् ॥८॥

अर्थ

हे मणि पादुके ! क्या आपने वास्तव में मुझे आपकी स्तुति लिखने को विवश नहीं किया हैं ?, जबकि मेरी यह वास्तविक इच्छा नहीं थी ।मेरे विवाद के लिए भगवान् श्री रंगनाथ को प्रमाणित करना निश्चित हैं , भले ही आप इनके चरणकमलों के संदर्भ में साक्षी होंगी ।(आपकी प्रशंसा लिखने में मेरी तो अनिच्छा ही हैं ।)

विशिष्ट टीका:-

1 यहां स्वामी श्री वेदांत देशिक प्रश्नों का उत्तर देते हैं कि वे क्यों श्री रंगनाथ भगवान् की पादुका की विशेषताओं की प्रशंसा करने में लगे , जबकि उन्हें विद्वानों से प्रतिकूल आलोचनाएं भी सुनने को मिली थी। वे आगे कहते हैं , हे मणि पादुके! यद्यपि आप जानती हैं कि इस असंभव प्रयास में शामिल होने के लिए उनकी ना तो रूचि हैं और न ही उनमें इतनी शक्ति फिर भी आपने मुझे यह कार्य करने का आदेश दिया हैं ।आपके भगवान् श्रीरंगपति मेरी अयोग्यता को अच्छी तरह से जानते हैं । आपकी विशेष महिमा तथा आपके साथ उनके संबंध से भी केवल वे ही

अवगत हैं , इसलिए श्री रंगनाथ भगवान् स्वयं ही आपके कल्याण गुणों को हमें प्रकट करेंगे । जिससे हम आप को सच्ची श्रद्धा अर्पित करने के प्रयासों में सफल हो सके।

2 स्वामी श्री वेदांतदेशिक श्री पादुकाओं से कहते हैं कि उन्होंने इससे पहले पेरूमाल (भगवान्), लक्ष्मी जी ,और श्री रामानुज स्वामी जी पर भी कई स्तुतियां लिखी हैं , लेकिन उन्होंने पादुकाओं (नम्मालवार) पर किसी भी तरह की स्तुति नहीं की थी। वे कहते हैं की उनकी इस संदर्भ में रुचि नहीं थी, अब आप ही उन्हें आपके बारे में स्तुति लिखने का आदेश दे रही हो । वे इस प्रयास में शामिल होने के लिए उपयुक्त नहीं हैं , केवल श्रीरंगनाथ ही उनके चरण कमल के साथ आपके विशेष संबंध को जानते हैं (देवः रङ्गपतिः इह प्रमाणम्) । केवल उन्हीं के पास इस विशेष संबंध को उजागर करने का एकमात्र अधिकार हैं एवं योग्यता भी हैं , इसलिए वे उनसे (रंगनाथ भगवान्) से आग्रह करते हैं की उन्हें आपके बारे में सत्यता तथा प्रमाणिकता के साथ स्तुति लिखने का आशीर्वाद प्रदान करें।

श्रीरंगनाथपादुकासहस्त्रं का श्लोक 9

यदाधारं विश्वं गतिरपि च यस्तस्य परमा

तमप्येका धत्से दिशसि च गतिं तस्य रुचिराम् ।

कथं सा कंसारेर्द्रुहिणहरदुर्बोधमहिमा

कवीनां क्षुद्राणां त्वमसि मणिपादु स्तुतिपदम् ॥९॥

अर्थ

ओह श्री मणि पादुके ! आप श्री रंगनाथ भगवान् को धारण करती हैं जो सभी लोकों को धारण करते हैं । अगर भगवान् सभी को उच्चतम आश्रय प्रदान करना चाहते हैं , तब आप उनको सुगम मार्ग पर ले जाती हो। आप की महानता तो ब्रह्मा जी और शिवजी के समझ से भी परे हैं । आप, तब हम जैसे निम्न स्तर के लोगों के लेखनी की कविता की वस्तु किस प्रकार बनेगी?

विशिष्ट टीका:-

1 यहां स्वामी श्री वेदांतदेशिक मन से श्रीरंगनाथ की आंखों में देखते हैं , जिनके कृष्णावतार में दामोदर कृष्ण के रूप में अपनी माता की रस्सी से पीठ पर निशान पड़ गए थे , और उन्हें कृष्ण अवतार की महिमा के रूप में कंसारि के नाम से संबोधित करते हैं । ऐसा सामान्यतया माना

जाता हैं कि श्रीरंगम् के “मूल विग्रह” कृष्ण अवतार तथा “उत्सव विग्रह” राम अवतार को निरूपित करते हैं ।

2 स्वामी श्री वेदांत देशिक बताते हैं कि श्री रंगनाथ भगवान् पूरे संसार को धारण करते हैं। हमारे आचार्य इस संदर्भ में भगवान् की रत्नाभूषित पादुकाओं की महिमा पर आश्चर्य करते हैं , श्री रंगनाथ की मणिजड़ित पादुका! आप उन यशस्वी भगवान् को ले जाती हो जो सभी प्रकार के ब्रह्मांडो के विश्व धारण के रूप में धारक हैं । यहां तक की सर्वशक्ति भी आप ही के द्वारा जनित हैं ।आप ही सर्वशक्ति की जनक हैं । इस अतुल्य कार्य के अलावा आप उन्हें हर जगह अपनी पीठ पर ले जाती हो जहां जहां वे अपने दिव्य कार्यों के लिए जाते हैं। आप उनका हर कदम पर समर्थन करती हो आपके इस असाधारण प्रदर्शन के कारण आप ब्रह्मा, रुद्रादि के सामर्थ्य से भी परे हो, आप उनसे श्रेणी में उत्कृष्ट पद पर स्थित हो। यहां तक कि ब्रह्मा जी ,शिव जी एवं अन्य देवता भी आपके गुणों को पूरी तरह नहीं समझ सकते हैं , और ना ही आप की प्रशंसा में स्तुति की रचना कर सकते हैं । यदि ब्रह्मा जी और शिवजी उचित तरीके से आपकी प्रशंसा में सफल नहीं हो पाए तो मैं (वेदान्त देशिक स्वामी) और अन्य जो मात्र एक अकुशल कवि हैं आपकी ठीक तरह से प्रशंसा करने के प्रयासों में सफल होने की क्या आशा भी कर सकता हूँ ?

3 इस श्लोक में दो मूल वाक्यांश हैं

अ) तमप्येका धत्से

यहां तक कि भगवान् को आप, अपनी पीठ पर ले जाती हैं।

ब) तस्य रुचिराम् गतिं च दिशसि

उन्हें ले जाने के अलावा आप उन्हें सुंदर चाल चलने की कला भी प्रदान करती हैं।

(नडै अळगु और स्थान विशेषम्)

4 श्री वेदांत देशिक स्वामी विस्मय पूर्ण भाव से घोषणा के साथ इस श्लोक का निष्कर्ष बताते हैं , आप की महानता श्रीमन्नारायण के पुत्र तथा पौत्र के ज्ञान से भी बढ़कर हैं। हम जैसे क्षुद्र सामान्य कवि फिर आप की महिमा गाने का प्रयास कैसे कर सकते हैं ?

5 श्री रंगनाथ भगवान् इस ब्रम्हांड की चेतन तथा अचेतन की आत्मा हैं। उन प्रभु के लिए ज्ञानी आलवार, आत्मा बन जाते हैं। फिर पेरूमाल हमारे समक्ष आलवार के अनुग्रह पर आते हैं। जिन आलवार के लिये भगवान् श्रीमन्नारायण के अलावा और कुछ भी वांछनीय नहीं हैं , ऐसे आलवार के बारे में स्वामी श्री वेदांत देशिक यहां पर बड़ी सांस भरकर कहते हैं , कि मैं ऐसे महान श्री रंगनाथ भगवान् की पादुका की महिमा गान का प्रयास कैसे कर सकता हूं ? यहां तक कि स्वयं भगवान् भी यदि मुझे इस विषय में प्रशिक्षित करें तब भी इस असंभव प्रयास में सफल नहीं हो पाऊंगा।

श्री रंगनाथ पादुका सहस्रं का श्लोक 10

श्रुतप्रज्ञासम्पन्महितमहिमानः कतिकति

स्तुवन्ति त्वां सन्तः श्रुतिकुहरकण्डूहरगिरः ।

अहन्त्वल्पस्तद्वद्यदिह बहु जल्पामि तदपि

त्वदायत्तं रङ्गक्षितिरमनपादावनि विदुः ॥१०॥

अर्थ

हे श्री रंगनाथ पादुका ! शास्त्रीय ज्ञान में सक्षम एवं उत्कृष्ट बुद्धि वाले लोग , आपकी महिमा की कृतियां लिखते हैं जो की सुनने वाले के कानों को आनंदित करके, कानों की सुनने की इच्छा और ज्यादा बढ़ा देते हैं । ऐसा सभी जानते हैं कि मैं एक कनिष्ठ कवि होकर भी आपके प्रभाव के कारण बहुत कुछ कहूंगा ।

विशिष्ट टीका:-

1 यहां स्वामी श्री वेदांत देशिक श्रीरंग की स्थिति को संबोधित करते हैं रमनपादावनि (और स्वीकृत करते हैं कि वे जो महान आचार्यों के अनुकरण में जो कुछ करने का प्रयास कर रहे हैं यह सब स्वयं श्री शठकोप सूरी की शक्ति (कृपा) से संभव हैं ।

2 स्वामी श्री वेदांतदेशिक उन संतों का वर्णन करते हैं जिन्होंने श्रीरंगम् के भगवान् के दिव्य मणि पादुकाओं की प्रशंसा की हैं उन्हें निम्नलिखित दो श्रेणियों में बताया हैं

अ) श्रुत:- वह जिन्हें शास्त्र ज्ञान हैं एवं श्रुति हैं (विद्वान ,शिक्षित एवं वेदों में निपुण महात्मा)

ब) प्रज्ञा सम्पन्महितमहिमानः :- वह जिनकी बुद्धि भगवान् के अनुग्रह के कारण अच्छी हैं और चतुर बुद्धि के साथ सकल शास्त्रार्थ ग्रहण करने के लिए पूरे संसार द्वारा पूजा जाते हैं ।

3 उपरोक्त दो श्रेणियों के संतों ने श्री दिव्यमणिपादुकाओं पर स्तुतियों की रचना की हैं जो पवित्रता में वेद मंत्रों के समान हैं जब यह महान स्तुतियां हमारे कानों के क्षेत्र से गुजरती हैं तब वह कान के क्षेत्र (आंतरिक कान) में होने वाली खुजली के लिए एक शक्तिशाली विषहर औषधि के रूप में कार्य करती हैं । स्वामी श्री वेदांत देशिक दिव्य पादुकाओं की श्री सूक्ति पर कण्डूहर शब्द का प्रयोग करते जिसे सुनने से कान के आंतरिक हिस्से में होने वाली लगातार खुजली से राहत होती हैं।

केवल एक और अन्य स्तुति, जहां पर स्वामी श्री वेदांत देशिक की श्री सूक्ति में कण्डूहर शब्द का प्रयोग हुआ है , वह है उनका दशावतार स्तोत्र । वहां श्री वेदांत देशिक स्वामी ने "विहार कच्छप" की स्थिति का वर्णन किया हैं जिन्होंने एक विशाल कछुए का रूप धारण किया ताकि वे अपनी पीठ पर मंदराचल पहाड़ को धारण कर सके जिससे क्षीरसागर को मथा जा सके उनके शब्द हैं " दशावतार स्तोत्र :- **अव्यासुर्भुवन त्रयीमनिभृतम् कण्डूयनैरद्रिणा , निद्राणस्य परस्य कूर्मवपुषो निःश्वासवातोर्मयः ।"** यहां पर हमारे भगवान् को अपनी विशाल पीठ पर मंद्र पर्वत के घिसने से उत्पन्न हुई खुजली से मिलने वाली राहत के अनुभव से निद्रा में जाते हुए दर्शाया गया हैं। स्वामी श्री वेदांत देशिक भगवान् श्री कूर्मावतार के सोते समय अंतः श्वसन एवं बाह्य श्वसन से तीनों लोकों की रक्षा करने की प्रार्थना करते हैं।

4 उत्तमुर स्वामी बहुत बढ़िया तरह से उन संतो के प्रयासों को बताते हैं , जिन्होंने दिव्य पादुकाओं की महिमा इससे पहले भी गाई हैं और स्वामी श्री वेदांत देशिक के प्रयासों से भी तुलना करते हैं ।

उत्तमुर अभिनवदेशिक के अनुसार स्वामी श्री वेदांतदेशिक इस श्लोक में कहते हैं , हे श्री रंगनाथपादुके !वेदों में पारंगत एवं शिक्षित विद्वान बहुत हैं जो आप की प्रशंसा में कविताएं लिखते हैं लेकिन मुझ जैसे कम बुद्धि वाले को यह स्पष्ट नहीं हैं कि उनकी स्तुति स्वयं भगवान् के लिए हैं या आपके लिए हैं। हालांकि मैं बहुत स्पष्ट हूं कि मेरे द्वारा की गई प्रशंसा केवल आपके पवित्र स्वभाव के लिए और किसी अन्य के लिए नहीं हैं।

श्री रंगनाथ पादुका सहस्रं का श्लोक 11

यदेष स्तौमि त्वां त्रियुगचरनत्रायिणि ततो

महिम्नः का हानिस्तव मम तु सम्पन्निरवधिः ।

शुना लीढा कामं भवतु सुरसिन्धुर्भगवती

तदेषा किम्भूता स तु सपदि सन्तापरहितः ॥११॥

अर्थ

ओह पादुका! जब मैं आपकी प्रशंसा करता हूं , तो इससे आप की महानता को क्या हानि होगी? कुछ भी नहीं , जबकि इससे मेरा ही यश वास्तव में असीमित रूप से फैलेगा। जिस तरह गंगा के पानी में कुत्ते द्वारा मुंह लगाने से गंगा की पवित्रता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता हैं , और कुत्ते की प्यास ही बुझती हैं । इस प्रकार आप की महिमा लिखने से मेरा लाभ ही हैं ।

विशिष्ट टीका:-

1 स्वामी श्री वेदांत देशिक की विनम्रता यहां हमें तिरुमला के वेंकटेश भगवान् के समक्ष तिरुमंगै आलवार के सब से विनम्र निवेदन की याद दिलाता हैं " तिरुवेङ्गडवा ! नायेन् वन्दडैन्देन्* नल्गि आळ् एनै क्कोण्डरुळै - पेरिय तिरुमोळि 1.9.1" तिरुवेंकटनाथ के घंटा अवतार यहां

पर श्री रंगनाथ भगवान् की दिव्य मणि पादुकाओं पर स्तुति की रचना करने के अपने भाग्य को विनम्रता पूर्वक स्वीकार करते हुए प्रसन्नता महसूस करते हैं।

2 संपूर्ण श्री रंगनाथपादुकासहस्रं में स्वामी श्री वेदांत देशिक दिव्य मणि पादुकाओं को आदरपूर्वक उन्हें विभिन्न अद्भुत नामों से संबोधित करते हैं। यहां श्री वेदांत देशिक, दिव्य मणि पादुकाओं को "त्रियुग चरणत्रायणी" से संबोधित करते हैं। 3 युग का अर्थ 3 जोड़े मतलब कुल 6 से हैं ।इस तरह त्रियुग श्री भगवान् के सम्पूर्ण षडगुणों से संबंधित हैं । उनके 6 प्रसिद्ध गुण हैं ज्ञान ,शक्ति ,बल ,ऐश्वर्य, वीर्य और तेज। दिव्य पादुकाएं इन 6 शुभ गुणों वाले भगवान् के पवित्र श्री चरण कमलों की रक्षा करती हैं। इसलिए उन्हें यहां "त्रियुगचरणत्रायणी" के नाम से संबोधित किया गया हैं।

3 स्वामी श्री वेदांत देशिक यहां पादुकाओं को याद दिलाते हैं कि पादुका की प्रशंसा करने के उनके मूर्ख प्रयास में पादुकाओं को कोई नुकसान महसूस नहीं होगा। (त्वां यशः स्तौमि ;इति यत महिम्नः का हानि) जबकि पादुकाओं की प्रशंसा से पादुकाओं को कोई नुकसान अथवा असुविधा नहीं हैं स्वामी श्री वेदांत देशिक यहां पर इंगित करते हैं की पादुकाओं पर स्तुति लिखने के कार्य में पादुकाएं उन पर असीमित आध्यात्मिक संपत्ति की वर्षा करती हैं ।

4 स्वामी श्री वेदांत देशिक अपनी इस भाग्यशाली परिस्थिति की तुलना, एक नीच कुत्ते के अपनी प्यास बुझाने के लिए गंगा नदी (भगवती सुरसिंधु:) में मुंह लगाने से करते हैं। इससे कुत्ते को पवित्र गंगा के आशीर्वाद से इहलोक-परलोक सुख की प्राप्ति होती हैं ,क्योंकि उसका उद्गम षडगुण सम्पन्न श्री भगवान् के पवित्र चरण कमलों से हुआ हैं (तिरूवडि)। और इससे दिव्य नदी की महिमा कम नहीं होती हैं बल्कि उस कुत्ते की प्यास गंगा के पवित्र प्रवाह से बुझ जाती है।

श्री रंगनाथ पादुका सहस्रं का श्लोक 12

मितप्रेक्षालाभक्षणपरिणमत्पञ्चषपदा

मदुक्तिस्त्वय्येषा महितकविसंरम्भविषये ।

न कस्येयं हास्या हरिचरणधात्रि क्षितितले

मुहुर्वात्याधूते मुखपवनविष्फूर्जितमिव ॥१२॥

अर्थ

ओह मणि पादुका । मेरी काव्यात्मक क्षमता का स्तर केवल 5 या 6 शब्द बोलने का ही हैं वो भी तब जब एक हल्की सी मानसिक दीप्ति होती हैं ।

लेकिन अब मैं आप की सराहना का प्रयास कर रहा हूँ, जो कि प्रसिद्ध कवियों के लिए हास्यास्पद ही होगा। अर्थात मेरी रचना सबकी हंसी का पात्र ही बनेगी। इसकी उपमा, एक पेड़ को गिराने के लिए हवा के तूफान के सामने मुँह से निकली हवा के समान होगी।

विशिष्ट टीका:-

1 दिव्य पादुकाओं को नमस्कार इस श्लोक में इस प्रकार है "हरिचरणधात्रि तुभ्यं नमः"।हे भगवान् के पवित्र श्री चरणों की रक्षा करने वाली पादुका! मेरा आपको प्रणाम हैं ।

2 स्वामी श्री वेदांत देशिक उनकी उक्ति की तुलना करते है (महितकविसंरम्भ)वे कहते है कि पादुकाओं के यश गान में निकले उनके शब्द उन महान कवियों के सहज प्रयासों के सामने बहुत तुच्छ हैं । (मितप्रेक्षा)

वे अपने अत्यल्प प्रयासों की तुलना महान कवियों से एक समानता से करते हैं और निष्कर्ष निकालते हैं कि वास्तव में उनका कमजोर और घटिया प्रयास हँसने लायक ही हैं ।वे अपनी तुलना इस प्रकार करते हैं कि एक व्यक्ति विनम्रता पूर्वक मुँह में हवा भरकर एक विशाल पेड़ को हिलाने की कोशिश करता हैं जबकि एक शक्तिशाली हवा का विशाल चक्रवात उस विशाल पेड़ को हिला कर रख देता हैं ।

3 स्वामी श्री वेदांत देशिक कहते हैं , हे श्रीहरिपादुके! आपकी प्रशंसा करने का मेरा तुच्छ प्रयास मुझे महान कवि की पदवी नहीं दिलाएगा (महितकविसंरम्भ)। वास्तव में तो आप की महिमा गान में लगे रहने से मेरे मन तथा विचारों का शुद्धिकरण ही होगा । मेरा प्रयास तो एक कमजोर व्यक्ति द्वारा विशाल वस्तु को हिलाने के लिए मुँह की हवा से मारे गए प्रहार या धक्के जैसे हैं जबकि विशाल वस्तु को हिलाने में हवा का तेज झोंका सामान्य रूप से सफल हो सकता हैं । इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं हैं कि अन्य सक्षम कवि आपकी प्रशंसा में मेरे दुर्बल प्रयासों की हंसी उड़ाते हैं ।(पञ्चषपदा)

4 श्री वेदांत देशिक जो की कवियों में सिंह के समान हैं , ने इस दिव्य मणि पादुकाओं पर भव्य स्तुति को एक रात के 1 याम के सीमित समय में एक चक्रवात की गति से पूर्ण किया। विनम्रता के भाव से स्वामी श्री वेदांत देशिक अपने प्रयासों को "मितप्रेक्षालाभक्षणपरिणमत्पञ्चषपदा" से संबोधित किया। मितप्रेक्षा का अर्थ हैं "तुच्छ बुद्धि " उस सीमित बुद्धि का फल 5 या 6 पदों से लेकर एक श्लोक का आकार लेकर खिल उठता हैं । वह इस तरह के रेंगते चलने वाले अथवा कमजोर प्रयासों को अपने मुंह से हवा के कश छोड़ने के समान बताते हैं । "मुखपवनविष्फूर्जितमिव"

कवियों में सबसे महान एवं सर्वतंत्र-स्वतंत्र जिन्होंने 862 श्लोक वाले 22 स्वर्णिम छंदों में 28 स्तोत्रों की रचना की जिनमें से दंडकम, मालिनि, वंश स्तंभ , हरिणी इत्यादि छंद प्रमुख

हैं| अपने प्रयासों को विनम्रता पूर्वक उस व्यक्ति से तुलना करते हैं जो एक विशाल पेड़ को गिराने के लिए हवा को मुख से निकालता रहता हैं। वे यह अलंकृत प्रश्न बार बार पूछते हैं की "कौन मेरे इस दुर्बल प्रयास पर नहीं हंसेगा?" (कस्य न हास्या)

श्री रंगनाथपादुकासहस्रं का श्लोक 13

निस्सन्देहनिजापकर्षविषयोत्कर्षोऽपि हर्षोदय -

प्रत्यूढक्रमभक्तिवैभवभवद्वैयात्यवाचालितः ।

रङ्गाधीशपदत्रवर्ननकृतारम्भैर्निगुम्भैर्गिरां

नर्मास्वादिषु वेङ्कटेश्वरकविर्नासीरमासीदति ॥१३॥

अर्थ

कवि वेंकटनाथ, श्रीरंगनाथपादुका की प्रशंसा के संदर्भ में शब्दों के खेल में सभी कवियों से सबसे आगे खड़े हैं । लेकिन वे अपने विषय मे यह सोचते हैं कि वे सबसे निम्न स्तर पर हैं एवं पादुका विषय का स्तोत्र गान सबसे उच्च स्तर पर हैं । फिर भी उन्होंने इस स्तुति का आरंभ किया हैं क्योंकि पादुका के प्रशंसा गान की प्रसन्नता ने उनके मन में एक अलग ही उत्साह उत्पन्न कर दिया हैं। जो कि अवांछित हैं। इससे एक अजेय भक्ति उत्पन्न होती हैं जो उन्हें वाचाल बनाने का साहस देगी।

विशिष्ट टीका:-

1 इस श्लोक में दिव्य पादुकाओं के लिए नमस्कार इस प्रकार हैं , "रङ्गाधीशपदत्रपादुके तुभ्यं नमः" ओह श्री रंगनाथ स्वामी की रक्षा करने वाली पादुका! मेरा आप को शत-शत प्रणाम हैं।

2 अब तक श्री वेदांत देशिक स्वामी ने नम्रतापूर्वक भगवान् श्री रंगनाथ की पादुकाओं की शुभ विशेषताओं की प्रशंसा करने में अपनी सीमाओं के बारे में इंगित किया । इस श्लोक में पवित्र पादुकाओं के महिमा गान पर एक काव्य लिखने के पीछे अपनी वास्तविक भावनाओं को समझाते हैं । वे कहते हैं , हे पादुका ! आपकी श्रेष्ठता एवं आपकी प्रशंसा करने में मेरी अयोग्यता पर मुझे जरा भी संदेह नहीं हैं । जब इस संदर्भ में मेरा संशय खत्म हो जाएगा तब मैं आपकी प्रशंसा गान के साहसिक प्रयास में स्वचालित रूप से एवं भक्ति भाव से आगे बढ़ जाऊंगा। आप की महिमा और वैभव के अच्छे विचार ने मेरी विनम्रता के बांध तोड़ दिए हैं । उत्कृष्ट तथा उल्लासपूर्ण विचारों के प्रवाह स्वतः निकलने लगे हैं । मेरे उदार विचार कुछ लोगों को हास्यपूर्ण प्रतीत हो सकते हैं , और यह लोग मेरे इस कार्य को हास्य के रूप में अवकलन कर सकते हैं , जो उन्हें हंसाने की कोशिश कर रहा हैं । श्री वेंकट नाथ कवि के रूप में पहचाने जाने वाले यहां पर अपनी गहरी आंतरिक भावनाओं को लिखने के लिए प्रेरित करते हैं कि "आप पर स्तुति लिखने के लिए मुझे किसने प्रेरित किया?"

3 यहां पर दिए गए शब्दों के खेल, वेदांत देशिक स्वामी के वैराग्यपंचक के पंचम श्लोक की याद दिलाते हैं , जहां स्वामी श्री वेदांत देशिक ने धन शब्द का 11 बार बहुत ही चातुर्य से प्रयोग किया था।

शरीर पतनावधि प्रभु निषेवणापादनात्

अबिन्धन धनञ्जय प्रशमदं धनं दन्धनम् ।

धनञ्जय विवर्धनं धनमुदूढ गोवर्धनं

सुसाधनमबाधनं सुमनसां समाराधनम् ॥ ५ ॥

पादुका सहस्रं के इस 13 वें श्लोक में अपकार, उत्कर्ष ,तथा हर्ष जैसे अलंकृत शब्दों से खेलते हैं। अपनी कमजोरी के बारे में बोलते हुए ,वे अपकार शब्द का प्रयोग करते हैं , जबकि पादुका के गुणों की उदारता को संबोधित करने के लिए उत्कर्ष शब्द का प्रयोग करते हैं । जब वे पादुकाओं के विचार पर "कर्म भक्ति" से उत्पन्न साहस के बारे में बोलते हैं तब स्वामी श्री वेदांत देशिक कहते हैं कि उन्हें "संकल्प सूर्योदयं" की भांति "हर्ष उदयम्" महसूस हो रहा हैं । इस प्रकार स्वयं के बारे में अपकार (अयोग्यता), पादुकाओं के लिए उत्कर्ष (उदारता)एवं पादुकाओं के वैभव को वर्णन करने के प्रचार के विचार के लिए प्रसन्नता(हर्ष) जैसे शब्दों का स्वामी श्री वेदांत देशिक द्वारा इस श्लोक में बहुत ही सुंदर तरीके से संजोया गया हैं ।

4 स्वामी श्री वेदांत देशिक भगवान् की पादुकाओं के लिए समर्पण भाव से उत्पन्न प्रसन्नता को यहां बताते हैं। पादुकाओं ने स्वामी श्री वेदांत देशिक को साहस प्रदान किया हैं , जिसके कारण वे बढ़ा-चढ़ाकर स्तुति कर पा रहे हैं । इससे जो इस प्रतियोगिता में संलग्न हैं उनमें वे प्रथम बनने के योग्य हो गए हैं । (गिरां निगुम्भैः नर्मास्वादिषु वेङ्कटेश्वरकविर्नासीरमासीदति)

श्रीरंगनाथपादुकासहस्रं का श्लोक 14

रङ्गक्ष्मापतिरत्नपादु भवतीं तुष्टूषतो मे जवा -

ज्जृम्भन्तां भवदीयशिञ्जितसुधासन्दोहसन्देहदाः ।

श्लाघाघूर्णितचन्द्रशेखरजटाजङ्घालगङ्गापय -

स्त्रासादेशविश्रृङ्खलप्रसरणोत्सिक्ताः स्वयं सूक्तयः ॥१४॥

अर्थ

हे श्रीरंगनाथमणिपादुका ! जब मैं आपकी प्रशंसा में स्तुति लिखूं , तब काश आपके चलने की आवाज की याद दिलाने वाली, स्तुति का प्रवाह मेरे द्वारा सहज एवं मधुरता से प्रकट हो जिस तरह शिव जी के सिर हिलाने से प्रचंड प्रवाह के साथ गंगा की धारा बहती हैं ।

विशिष्ट टीका:-

1 इस श्लोक में दिव्य पादुकाओं का अभिनंदन इस प्रकार हैं , (रङ्गक्ष्मापतिरत्नपादुके ! तुभ्यं नमः) ओह श्री रंगनाथ की रत्नजडित पादुका ! आपको मेरा प्रणाम हैं ।

2 यहां पर श्री वेदांतदेशिक स्वामी पादुकाओं की महिमा पर श्लोकों के तीव्र प्रवाह के लिए प्रार्थना करते हैं क्योंकि उनके पास 1000 श्लोकों की इस सूक्ति को समाप्त करने के लिए केवल कुछ घंटों का समय हैं । स्वामी श्री वेदांतदेशिक भगवान् की दिव्य पादुकाओं की गरिमा

तथा पवित्रता के इस काव्य को उपयुक्त तरीके से समझने के लिए भी प्रार्थना करते हैं ,इस संदर्भ में स्वामी श्री वेदांतदेशिक कहते हैं , हे श्री रंगनाथ की सुंदर बहुमूल्य रत्नों से जड़ित पादुका ! आप मुझे आपकी महिमा में अर्थ और सुंदरता की गहराई वाले छंद सरलता से लिखने का आशीर्वाद देवें । वे श्लोक या छंद उतनी उच्च क्षमता वाले होने चाहिए कि श्रीरंगनाथ के पास खड़े चंद्रशेखर जी भी सहमति में सम्मान के साथ सिर हिलाकर सहमति प्रकट करें। श्री शंकर जी के प्रबल संकेत के परिणाम स्वरूप उनकी जटा में रहने वाली गंगा नदी का तेज प्रवाह निकलता हैं । उसी तरह श्री चंद्रशेखर जी की मेरी कृति पर जोरदार सहमति पर आपकी प्रशंसा में गंगा के बहते हुए तेज प्रवाह जैसे मेरे श्लोकों का प्रवाह हो जाए।

3 स्वामी श्री वेदांत देशिक प्रार्थना करते हैं कि पादुकाओं पर उनके द्वारा गौरवान्वित स्तुति भी बिना रुकावट तथा तेज वृद्धि के साथ रचित हो। (विश्रृङ्खलप्रसरणोत्सिक्ताः सूक्तयः स्वयं जवा - ज्जृम्भन्तां) इसमें शब्द जृम्भन्तां एक आशीर्वाद की प्रतिध्वनि है, "वर्धताम् अभिवर्धताम्" । स्वामी अपनी सूक्ति की तुलना गंगा प्रवाह के वेग से करते हैं , जो श्री गंगाधर की जटाओं से निकल रही हैं । जिससे श्री वेदांतदेशिक स्वामी को भगवान् श्री रंगनाथ की पादुकाओं पर स्तुति की सहमति मिल रही हैं ।

4 स्वामी श्री वेदांत देशिक भगवान् की पादुकाओं से प्रार्थना कर रहे हैं कि उन्हें इस तरह से रचना करने की शक्ति मिले कि ,उनके श्लोकों की ध्वनि एवं भगवान् के आवागमन से उत्पन्न पादुकाओं की मधुर ध्वनि बिल्कुल एक जैसी प्रतीत हो । (मे भवदीय सुधा शिञ्जितसन्दोहसन्देहदाः स्वयं जवा-ज्जृम्भन्तां) श्री चंद्रशेखर जी यहां जैसे ही स्वामी श्री वेदांत देशिक के श्लोकों को ध्यान से सुनते हैं वे आश्चर्य करते हैं कि क्या वे पादुकाओं के कि चलने से उत्पन्न मीठी ध्वनि सुन रहे हैं या फिर स्वामी श्री वेदांतदेशिक द्वारा रचित मधुर श्लोक सुन रहे हैं ।

श्री चंद्रशेखर जी को (सुधा शिञ्जितसन्दोह उक्ति) (शब्दों के अमृत से परिपूर्ण समूह पर) संदेह हो जाता हैं , एवं वे उनके स्तोत्र के बारे में उलझन में पड़ जाते हैं , कि यह आवाज भगवान् की पादुकाओं से आ रही हैं या स्वामी श्री वेदांत देशिक के मुख से आ रही हैं ।

5 हम सर्व ज्ञानी एवं भगवान् श्री रंगनाथ के परम भक्त श्री शिव जी की यहां पर आसानी से प्रबल सहमति देख सकते हैं। जो कि स्वामी श्री वेदांत देशिक द्वारा इस सुंदर दृश्य का वर्णन करने के लिए चुने गए शब्दों द्वारा प्रदर्शित होता है । "श्लाघाघूर्णितचन्द्रशेखरजटाजङ्घालगङ्गा" स्वामी श्री वेदांत देशिक बताते हैं की गंगा का प्रवाह श्री पादुका की स्तुति के बढ़ते प्रवाह से भयभीत है।

श्रीरंगनाथपादुकासहस्रं का श्लोक 15

हिमवन्नलसेतुमध्यभाजां भरताभ्यर्चितपादुकावतंसः ।

अतपोधनधर्मतः कवीनामखिलेष्वस्मि मनोरथेष्वबाह्यः ॥१५॥

अर्थ

जब मैंने एक बार भरत जी द्वारा पूजी गई पादुकाओं को अपने मस्तक पर धारण किया , तब मैं समस्त संभव अभिलाषाओं का एक धनी व्यक्ति बन गया हूं। जो अभिलाषाएं इस विराट भूमि पर हिमाचल से लेकर सेतु तक रहने वाले सभी कवियों द्वारा संजोई जाती हैं । (आचार्यों की कृपा सभी शक्तियां एवं पुरस्कार प्रदान करने वाली हैं ।)

विशिष्ट टीका:-

1 इससे पिछले श्लोक में स्वामी श्री वेदांत देशिक ने दिव्य पादुकाओं से प्रार्थना की हैं कि वह उन्हें ऐसा वरदान दे, जिससे पादुकाओं की प्रशंसा में शब्दों का प्रभाव तीव्र तथा सहज हो जाए। मणि पादुकाओं ने वरदान दिया "तथास्तु" (ऐसा ही होगा) स्वामी श्री वेदांतदेशिक ने पादुकाओं को प्रसन्नतापूर्वक प्रत्युत्तर दिया और कहा कि उनकी सबसे प्रिय इच्छा, अब दिव्य पादुकाओं द्वारा उनकी अनुमति मिलने से तथा उनके मस्तक पर धारण करने से पूर्ण हो गई हैं। स्वामी श्री वेदांतदेशिक आश्चर्य प्रकट करते हुए कहते हैं वे पादुकाएं जो पहले श्री भरत जी द्वारा पूजी गई थी अब मुझ जैसे नीच के मस्तक पर हैं । इसके प्रत्यक्ष प्रभाव से मैं बिना किसी प्रयास के ही हिमालय पर्वत एवं दक्षिणी महासागर पर श्री रामचंद्र जी के लिए कैंकर्य के रूप में नल द्वारा

बनाए गए पुल के बीच में सभी प्रतिभाशाली कवियों का स्वामी बन गया हूं। इन सभी प्रसिद्ध कवियों की योग्यता अब मुझ में प्रवेश कर चुकी हैं। अब मैं अपने आप को बहुत ही भाग्यशाली महसूस कर रहा हूं कि मुझे दिव्य मणि पादुकाओं की महिमा गान करने का यह शुभ कैंकर्य प्राप्त हुआ हैं ।

2 स्वामी श्री वेदांत देशिक दिव्य पादुकाओं के समक्ष यह स्वीकार करते हैं कि केवल उनके मस्तक पर पादुकाओं को धारण करने के शोभायमान अवसर ने उन्हें इतना शक्तिशाली बना दिया हैं कि वे पादुकाओं पर स्तुति की रचना कर सकते हैं। जो हिमालय और नलसेतु द्वारा भारतीय उपमहाद्वीप की चोटी तक रहने वाले सभी विद्वान कवियों की सभा द्वारा चिन्हित किसी भी रचना से बहुत ही उत्कृष्ट हैं।

3 इस श्लोक का आंतरिक अर्थ हैं की आचार्य के अनुग्रह से कोई भी चीज पूरी की जा सकती हैं स्वामी श्री वेदांत देशिक यहां पर श्री शठकोप स्वामी (श्री नम्मालवार) को अपने आचार्य के रूप में सम्मान अर्पित कर रहे हैं।

श्रीरंगनाथपादुकासहस्रं का श्लोक 16

अनिदम्प्रथमस्य शब्दराशेरपदं रङ्गधुरीणपादुके त्वाम् ।

गतभीतिरभिष्टुवन् विमोहात् परिहासेन विनोदयामि नाथम् ॥१६॥

अर्थ

हे श्री रंगनाथ पादुका ! मैंने बिना डरे आपके यशोगान का साहस किया है , जो कि वेदों के लिए भी समझ से बाहर हैं , जबकि वेद अनादि हैं । यह स्तुति केवल मेरी अज्ञानता का कारण हैं लेकिन यह स्तुति भगवान् की प्रसन्नता के लिए एक स्थान प्रदान करती है ।

विशिष्ट टीका:-

1 इस श्लोक में दिव्य पादुकाओं को नमस्कार इस प्रकार हैं "रङ्गधुरीणपादुके तुभ्यम् नमः" (श्री रंगनाथ भगवान् की पादुका को मेरा प्रणाम है ।)

2 इससे पिछले श्लोक में स्वामी श्री वेदांत देशिक ने उनके मस्तक पर दिव्य पादुकाओं को धारण करने के अनोखे लाभों की घोषणा अत्यंत गर्व के साथ की थी । उन्होंने अत्यंत उत्साह के साथ घोषित किया की पादुकाओं ने ही उन्हें सभी प्रतिभाशाली कवियों में उच्च स्थान प्रदान करने में सशक्त बनाया हैं । इस श्लोक में स्वामी श्री वेदांतदेशिक पुनः विनम्र भाव से बताते हैं , कि भगवान् की दिव्य पादुकाओं की असीमित महिमा में उनके द्वारा किया गया स्तुति रूप व्यर्थ

प्रयास, भगवान् को हंसी के लिए प्रेरित में सफल होगा। स्वामी श्री वेदांत देशिक स्वीकार करते हैं कि भगवान् को, उनके द्वारा किये गए व्यर्थ प्रयासों पर हंसाने को भगवान् के प्रति एक कैंकर्य समझा जाना चाहिए। स्वामी श्री वेदांतदेशिक स्वीकार करते हैं कि उनकी अनियंत्रित इच्छा भगवान् की पादुकाओं की स्तुति करने में संकोच की स्थिति को भी पार कर गई। जिन पादुकाओं की महिमा अनंत काल के वेदों की समझ के भी परे हैं ।

3 स्वामी श्री वेदांतदेशिक दिव्य पादुकाओं के वैभव को इस प्रकार प्रणाम करते हैं "अनिदम्प्रथमस्य शब्दराशेरपदं त्वाम् " (जिनका वैभव प्राचीन काल के वेदों के ज्ञान से भी परे हैं)। स्वामी श्री वेदांत देशिक कहते हैं कि वह प्रबल या सर्वोच्च महानता वाली पादुकाओं की स्तुति में शामिल होने के लिए अपने मूर्ख प्रयास को पहचानते हैं । वे दिव्य पादुकाओं की महिमा के कारण अपनी अज्ञानता से निकलकर साहसी बनने को दर्शाते हैं। जिन की महानता कालातीत श्रुतियों द्वारा भी समझी नहीं जा सकती हैं । स्वामी श्री वेदांत देशिक यह भी संकेत देते हैं कि उनका प्रयास एक मैराथन दौड़ जीतने के लिए दौड में एक बच्चे के प्रवेश करने जैसा हैं । वे कहते हैं कि उनका यह अस्थिर कदमों द्वारा चिन्हित प्रयास भगवान् को आनंदित करने एवं उनके हंसी के ठहाकों के लिए जरुर सफल होगा। स्वामी श्री वेदांतदेशिक इस बात से खुश हैं कि भगवान् भी उनके प्रयासों से आनंदित होंगे।

श्रीरंगनाथपादुकासहस्रं का श्लोक 17

वृत्तिभिर्बहुविधाभिराश्रिता वेङ्कटेश्वरकवेः सरस्वती ।

अद्य रङ्गपतिरत्नपादुके नर्तकीव भवतीं निषेवताम् ॥१७॥

अर्थ

श्री रंगनाथ पादुका ! मेरी रचना (कविता) का संगीत विभिन्न प्रकार की मुद्राओं , शैलियों , एवं अभिव्यक्तियों के साथ आपकी प्रसन्नता के लिए नृत्य करे।

विशिष्ट टीका:-

1 इस श्लोक में दिव्य पादुकाओं को नमस्कार इस प्रकार हैं (रङ्गपतिरत्नपादुके तुभ्यम् नमः) हे श्रीरंगम् के स्वामी की रत्नजडित पादुका ! आप को मेरा सादर प्रणाम है ।

2 यहां पर स्वामी श्री वेदांत देशिक एक कुशाग्र तथा प्रतिभाशाली नर्तक के रूप में भगवान् की पादुकाओं को हर्षित तथा मनोरंजित करने वाले अपने वाणी (बोलने की कला) का वर्णन करते हैं । वे कहते हैं "रङ्गपतिरत्नपादुके वेङ्कटेश्वरकवेः सरस्वती नर्तकीव भवतीं निषेवताम् "।

3 उत्तमुर स्वामी जी का अनुभव - इससे पिछले श्लोक में स्वामी श्री वेदांत देशिक भगवान् को प्रसन्न करने एवं मनोरंजित करने के लिए संदर्भित किया हैं । यहां वे कहते हैं कि वे भगवान् की

रत्नजडित पादुकाओं को आनंद देने में ज्यादा रुचि रखते हैं। वे कहते हैं कवि वेंकटेश के यह कथन आपका एक महान नर्तकी के रूप में गुणगान करें , जो अपने प्रसिद्ध नृत्य कौशल के माध्यम से संगीत एवं उनके पीछे के आंतरिक भावों को अद्भुत तरीके से समझाती हैं।

4 स्वामी श्री वेदांत देशिक अपने बोलने की कला की तुलना एक सुस्त नर्तकी से कहते हैं , जो अभिनय के द्वारा भगवान् को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करती हैं । यह कुछ समय अर्ध रूप में प्रत्यक्ष हैं तथा कई बार सांकेतिक।

5 भरतमुनि शास्त्र के संदर्भ में - स्वामी श्री वेदांत देशिक यहां पर आंगिकम (नर्तक के शरीर की मुद्राएं, यहां पर उनकी वाणी) एवं हस्त मुद्राओं के साथ विभिन्न स्थितियों (स्थान उनके , जिह्वा ,वाक, उत्पन्न करने की गतिविधियां /सरस्वती) की तरफ संकेत करते हैं। एक नर्तकी के 9 आंगिकम् हैं पुरुष नर्तक के 6 आंगिकम् हैं ।

श्री गोपाल विंशति का 19 वां श्लोक भगवान् के इस विशेष स्थान का कीर्ति गान करता हैं जो जलक्रीडा़ के लिए तैयार थे।

प्रत्यालीढस्थितिंअधिगतां प्राप्तगाढाङ्कपालीं

पश्चादीषन्मिलितनयनां प्रेयसीं प्रेक्षमाणः ।

भस्त्रायन्त्रप्रणिहितकरो भक्तजीवातुरव्याद्

वारिक्रीडानिबिडवसनो वल्लवीवल्लभो नः ॥ 19॥

6 स्वामी श्री वेदांत देशिक श्री रंगनाथ पादुका सहस्रं के 17 वें श्लोक का आरंभ इन शब्दों से करते हैं "वृत्तिभिर्बहुविधाभिराश्रिता वेङ्कटेश्वरकवेः सरस्वती नर्तकीव भवतीं निषेवताम्" यहां पर "बहुविधवृति" का मतलब नर्तक के विभिन्न अंगीकम का एवं स्थानों से हैं ।स्वामी श्री

वेदांत देशिक स्वयं श्री गोपाल विंशति के 16 वें श्लोक में वृत्ति शब्द का प्रयोग आंगिकम एवं स्थानों को दर्शाने के लिए करते हैं। यह श्लोक शरदपूर्णिमा की रात्रि को चंद्रमा से प्रकाशित यमुना नदी के तट पर भगवान् की रास क्रीडाओं के मानसिक चित्रण के संदर्भ में हैं। स्वामी श्री वेदांत देशिक यहां पर यह बताते हैं कि श्री राधागोपाल ने गोपियों को एक ललितावृत्ति नामक अभिनय सिखाया था।

"जयति ललितवृत्तिं शिक्षितो वल्लवीनां

शिथिलवलयशिञ्जाशीतलैर्हस्ततालैः ।

अखिलभुवनरक्षागोपवेशस्य विष्णो-

रधरमणिसुधायामंशवान् वंशनालः ॥ 16॥"

स्वामी श्री वेदांतदेशिक ने एक सर्वतंत्र-स्वतंत्र के रूप में एक नर्तक - नर्तकी की समानता का प्रयोग किया हैं। यह दर्शाता है कि उनकी वाणी इस श्लोक में श्री रंगनाथ की रत्नजडित पादुकाओं की महिमा गाने में कैंकर्य कर रही है।

श्रीरंगनाथपादुकासहस्रं का श्लोक 18

अपारकरुणाम्बुधेस्तव खलु प्रसादादहं

विधातुमपि शक्नुयां शतसहस्रिकां संहिताम् ।

तथापि हरिपादुके तव गुणौघलेशस्थिते -

रुदाहृतिरियं भवेदिति मिताऽपि युक्ता स्तुतिः ॥१८॥

अर्थ

हे श्री हरि की पादुका ! जब मैं आपकी कृपा के विशाल सागर के कारण कोई रचना करने का प्रयास करता हूं , तब मैं 100000 श्लोकों की भी कृति को भी पूर्ण कर सकता हूं। तब फिर 1000 श्लोकों की स्तुति (अब जो पूर्ण हो रही हैं) तो वो आपके गुणों के सागर का एक भाग का उदाहरण मात्र हैं ।

विशिष्ट टीका:-

1 इस श्लोक में पादुकाओं को नमस्कार इस प्रकार हैं "हरिपादुके तुभ्यं नमः" भगवान् श्री हरि की पवित्र पादुका मैं आपको सादर नमस्कार करता हूं ।

2 हे श्री हरिपादुके! आपने मुझे एक स्वामी के माध्यम से आपके शुभ गुणों पर 1000 श्लोकों की रचना करने का आदेश दिया हैं । आप असीम करुणा की सागर हैं और अब आप के अनुग्रह से आपके वैभव पर 100000 श्लोकों की व्याख्या करना भी कठिन कार्य नहीं हैं । तब भी

उसमें आप की महिमा का कुछ भाग ही पूर्ण हो पाएगा, इसलिए ऐसा प्रतीत होता हैं कि आपने मेरे लिए 1000 श्लोकों की रचना करना ही पर्याप्त निर्धारित किया हैं ।

3 उत्तमूर् स्वामी का अनुभव - स्वामी श्री वेदांत देशिक यहां पर कहते हैं कि ओह श्री हरि पादुका ! आप की असीमित कृपा पर वेदांत देशिक स्वामी को कोई संदेह नहीं हैं कि वे आप के पवित्र तथा शुभ विशेषताओं पर 100000 श्लोकों की रचना करने का भी कौशल हासिल कर सकते हैं , तब भी 100000 श्लोकों में आपके असीमित कल्याण गुणों का कुछ भाग ही समाविष्ट हो पाएगा। इसलिए आपकी महिमा गाने में 1000 श्लोकों की रचना करना ही उचित रहेगा ।

4 स्वामी श्री वेदांतदेशिक यहां बताते हैं की पादुकाओं की असीमित करुणा उन्हें कल्याण गुणों पर 100000 श्लोकों की रचना आसानी से करने की शक्ति प्रदान करेगी । वे इंगित करते हैं कि 100000 श्लोकों में भी, वे पादुकाओं के शुभ गुणों का कुछ भाग ही मुश्किल से पूर्ण कर पाएंगे। स्वामी श्री वेदांतदेशिक आश्चर्य करते हैं , कि यही कारण था, कि पादुकाओं ने उन्हें एक रात में केवल 1000 श्लोकों की रचना करने का आदेश दिया था।

5 इस श्लोक में स्वामी श्री वेदान्त देशिक "संहिताम्" मूल शब्द का प्रयोग करते हैं । जो सामान्यतया वेद संहिताओं से जुड़ा हुआ हैं । स्वामी श्री नम्मालवार की "तिरुवाय्मोऴि", जो द्रविड़ संहिता के रूप में जानी जाती हैं (वेदम् तमिऴ् शेय्द मारन्) । तिरुवाय्मोऴि के 1000 श्लोक हमें सामवेद की 1000 शाखाओं का स्मरण कराते हैं । इसलिए 1000 श्लोकों की उनकी स्तुति में "संहिताम्" शब्द के चयन से स्वामी हमें याद दिलाते हैं कि , उनका पादुकासहस्रं स्तोत्र श्री शठारि सूरी के तिरुवाय्मोऴि का सार है ।

श्रीरंगनाथपादुकासहस्रं का श्लोक 19

अनुकृतनिजनादां सूक्तिमापादयन्ती

मनसि वचसि च त्वं सावधाना मम स्याः ।

निशमयति यथाऽसौ निद्रया दूरमुक्तः

परिषदि सह लक्ष्म्या पादुके रङ्गनाथ ॥१९

अर्थ

हे पादुके ! मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप का निवास सदा मेरे हृदय एवं मेरी जिह्वा पर रहे। जिससे मेरी स्तुति की ध्वनि आपकी जैसी मधुर हो , और भगवान् श्री रंगनाथ अपनी पत्नी (महालक्ष्मी जी)के साथ अपनी नींद त्याग कर मेरी रचना को ध्यान पूर्वक बैठकर सुनें ।

विशिष्ट टीका:-

1 इस श्लोक में पादुकाओं को नमस्कार इस प्रकार हैं , "श्रीरंगनाथपादुके तुभ्यं नमः" हे श्री रंगनाथ की पादुकाओं मेरा आपको सादर प्रणाम हैं ।

2 उत्तमुर स्वामी का अनुभव - इस श्लोक में स्वामी श्री वेदांतदेशिक पादुकाओं से प्रार्थना करते हैं कि वह उनके मन तथा वाणी को ऐसा आशीर्वाद प्रदान करें , जिससे 1000 श्लोकों की उनकी रचना श्रीरंगम् के दिव्य दंपति के एकाग्र मन तथा ध्यान को आकर्षित करें। वे कहते हैं ,

हे पादुके ! जब भगवान् विचरण करते हैं , तब आप उन्हें धारण करती हैं , एवं उससे अत्यंत सुस्वर और मनोहारी ध्वनि उत्पन्न होती हैं । आपके स्वामी इस संगीत गोष्टी से आनन्दित होते हैं । जब भगवान् अपने आंतरिक कक्ष में प्रवेश करें तब आप मुझ में प्रवेश करके सुस्वर शब्दों का समावेश करें । क्योंकि यह शब्द आपको प्रभु को ले जाने वाले मधुर ध्वनि से मेल खाते हैं और भगवान् तथा उनकी पत्नी (महालक्ष्मी जी) मेरे शब्दों को भी आनंदित होकर सुनेगें । आप मुझे ऐसा आशीर्वाद प्रदान करें जिससे मैं आपकी स्तुति में ऐसे मधुर गुंजायमान श्लोकों की रचना कर सकूं , जिसे सुनने से दिव्य दंपति कभी भी थकान महसूस नहीं कर सकें ।

3 हे पादुके ! आपने मुझे आपकी स्तुति की रचना एक रात के समय में करने का आदेश दिया है । आप मुझे आशीर्वाद देवें जिससे मैं आपकी रमणीय नाद (स्वामी श्री नम्मालवार की सुक्तियों की ध्वनि जैसे) जैसे मधुर ध्वनि वाले श्लोकों की रचना कर सकूं। आप मुझे ऐसा आशीर्वाद देवें कि मेरी वाणी से मधुर तथा सुस्वर शब्दों की धारा का पूर्ण प्रवाह हो । आपकी कृपा के कारण मेरे मुख से निकले आपकी महिमा के श्लोकों को भगवान् श्री रंगनाथ तथा उनकी पत्नी श्रीरंगनायिकी अम्मा जी , जो रात्रि विश्राम की तैयारी में हैं ,अपनी नींद को त्यागकर उन्हें सुनें । और वे उन्हें सुनकर वह मंत्रमुग्ध हो जाएँ।

4 स्वामी श्री वेदांत देशिक ऐसे दृश्य का अनुभव करते हैं कि दिव्य दंपति अपनी नींद त्याग कर उनकी सभा में पादुकाओं (स्वामी श्रीनम्मालवार) पर मनोहारी स्तुति सुन रहे हैं । यह स्थिति स्वयं पादुकाओं के आशीर्वाद से संपन्न हो पाई हैं ।

5 स्वामी श्री वेदांत देशिक द्वारा भगवान् श्री रंगनाथ का रात्रि के देर प्रहर में जाग कर उनकी सभा में बैठने के भाव को इन शब्दों में निरूपित किया गया हैं " निद्रया दूरमुक्तः" । भगवान् ने नींद को बहुत दूर छोड़ दिया हैं और इसलिए भगवान् पूरी तरह से सचेत हैं क्योंकि उनकी रुचि स्वामी श्री वेदांत देशिक द्वारा पादुकाओं पर रचित स्तुति में हैं , और वे आनंदित हो रहे हैं ।

श्रीरंगनाथपादुकासहस्रं का श्लोक 20

त्वयि विहिता स्तुतिरेषा पदरक्षिणि भवति रङ्गनाथपदे ।

तदुपरि कृता सपर्या नमतामिव नाकिनां शिरसि ॥२०॥

अर्थ

हे पादुके ! भगवान् के श्रीचरणों में जो पुष्प अर्पित किए जाते हैं , बाद में वे पुष्प उन देवताओं के मस्तक पर पाए जाते हैं , जो भगवान् के श्रीचरणों के समक्ष झुक कर प्रणाम करते हैं। (यह प्रमाण अर्जुन द्वारा प्राप्त हुआ था जब वह भगवान् श्री कृष्ण के चरण पर सम्मान पूर्वक चढ़ाए हुए पुष्पों को अगले दिन सुबह ढूंढते हुए गए तब अर्जुन , वे पुष्प शिवजी के मस्तक पर प्राप्त करते हैं। वे पुष्प बिल्कुल वही पुष्प थे जो भगवान् श्री कृष्ण के चरण कमलों में अर्पित किए गए थे।) आप की प्रशंसा में यह स्तोत्र भगवान् श्री रंगनाथ के चरणों को भी आनंद प्रदान करता हैं।

विशिष्ट टीका:-

1 यहां पर पादुकाओं को नमस्कार इस प्रकार हैं "श्रीरंगनाथपदरक्षिणि ! तुभ्यं नमः" । हे भगवान् श्री रंगनाथ के पवित्र चरण कमलों की रक्षा करने वाली पादुका! मेरा आपको सादर प्रणाम हैं।

2 यहां पर स्वामी श्री वेदांत देशिक बताते हैं कि भगवान् की पादुकाओं का स्तोत्र , भगवान् के पवित्र चरणों की महिमा के लिये भी उपयुक्त होगा। उन भगवान् के पवित्र चरणों की सेवा पूजा सब तक पहुंचती हैं और ये पादुकायें देवताओं के मस्तक पर स्थायी रूप से रहती हैं । (नाकिनां शिरसि भवति) हालांकि यह स्तोत्र आप के संदर्भ में हैं "त्वयि विहिता" । आप

भगवान् श्री रंगनाथ के पवित्र चरण कमल में रहती हैं ,और देवताओं के मस्तक पर भी सदैव रहती हैं (नाकिनां शिरसि भवति)।

3 श्री भगवान् के चरणों में अर्जुन द्वारा अर्पित किए गए पुष्प अगले दिन श्री शिवजी के मस्तक पर पाए जाते हैं। भगवान् के श्रीचरणों की सेवा, भगवान् के पवित्र चरण एवं श्री शिव जी के मस्तक के आदान-प्रदान से संपन्न होती हैं। इसलिए, हे पादुके ! जब स्वामी श्री वेदांत देशिक आपका यशोगान करते हैं तब यह प्रशंसा आपके साथ-साथ भगवान् के चरण कमलों की भी हो जाती हैं।

4 इस श्लोक का आंतरिक अर्थ यह हैं कि भगवान् श्री रंगनाथ तब प्रसन्न होते हैं , जब हम हमारे आचार्यों का अभिनंदन करते हैं "तिरुउळ्ळम् उहक्कुम्" ।

5 स्वामी श्री वेदांत देशिक यह भी सुझाव देते हैं कि जो लोग श्री भगवान् के चरणकमल के लिए सहस्रनामार्चना सपर्या करते हैं , तब वे केवल हजार बार ही नमस्कार कर सकते हैं। लेकिन जब वे श्री भगवान् की चरण पादुकाओं की सहस्र अर्चना करते हैं तब यही अर्चना दोगुनी हो जाती हैं क्योंकि पादुकाएं जोड़ी में होती हैं ।

इति श्री पादुका सहस्रं प्रस्ताव पद्धतिः प्रथमा

श्री रंगनाथपादुकासहस्रं की पहली पद्धति प्रस्तावपद्धति संपूर्ण।